# Jahresabschluss

zum 31. Dezember 2016

| | |
|---|---|
| der | Sparkasse Regensburg |
| Sitz | Regensburg |

| | |
|---|---|
| eingetragen beim | |
| Amtsgericht | Regensburg |
| Handelsregister-Nr. | HRA 6259 |

# Aktivseite — Jahresbilanz zum 31. Dezember 2016

| | | | EUR | EUR | EUR | 31.12.2015 TEUR |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **1. Barreserve** | | | | | | |
| a) Kassenbestand | | | | 21.991.139,21 | | 25.839 |
| b) Guthaben bei der Deutschen Bundesbank | | | | 168.016.582,90 | | 32.577 |
| | | | | | 190.007.722,11 | 58.416 |
| **2. Schuldtitel öffentlicher Stellen und Wechsel, die zur Refinanzierung bei der Deutschen Bundesbank zugelassen sind** | | | | | | |
| a) Schatzwechsel und unverzinsliche Schatzanweisungen sowie ähnliche Schuldtitel öffentlicher Stellen | | | | 0,00 | | 0 |
| b) Wechsel | | | | 0,00 | | 0 |
| | | | | | 0,00 | 0 |
| **3. Forderungen an Kreditinstitute** | | | | | | |
| a) täglich fällig | | | | 30.271.004,96 | | 58.498 |
| b) andere Forderungen | | | | 91.834.664,28 | | 91.981 |
| | | | | | 122.105.669,24 | 150.479 |
| **4. Forderungen an Kunden** | | | | | 2.777.091.050,87 | 2.681.097 |
| darunter: | | | | | | |
| durch Grundpfandrechte gesichert | 1.361.815.309,95 | EUR | | | | ( 1.290.257 ) |
| Kommunalkredite | 231.209.423,71 | EUR | | | | ( 267.319 ) |
| **5. Schuldverschreibungen und andere festverzinsliche Wertpapiere** | | | | | | |
| a) Geldmarktpapiere | | | | | | |
| aa) von öffentlichen Emittenten | | | 0,00 | | | 0 |
| darunter: beleihbar bei der Deutschen Bundesbank | 0,00 | EUR | | | | ( 0 ) |
| ab) von anderen Emittenten | | | 0,00 | | | 0 |
| darunter: beleihbar bei der Deutschen Bundesbank | 0,00 | EUR | | | | ( 0 ) |
| | | | | 0,00 | | 0 |
| b) Anleihen und Schuldverschreibungen | | | | | | |
| ba) von öffentlichen Emittenten | | | 176.829.140,00 | | | 176.397 |
| darunter: beleihbar bei der Deutschen Bundesbank | 176.829.140,00 | EUR | | | | ( 176.397 ) |
| bb) von anderen Emittenten | | | 509.930.995,62 | | | 596.050 |
| darunter: beleihbar bei der Deutschen Bundesbank | 509.930.995,62 | EUR | | | | ( 596.050 ) |
| | | | | 686.760.135,62 | | 772.447 |
| c) eigene Schuldverschreibungen | | | | 0,00 | | 0 |
| Nennbetrag | 0,00 | EUR | | | | ( 0 ) |
| | | | | | 686.760.135,62 | 772.447 |
| **6. Aktien und andere nicht festverzinsliche Wertpapiere** | | | | | 296.675.828,22 | 368.418 |
| **6a. Handelsbestand** | | | | | 0,00 | 0 |
| **7. Beteiligungen** | | | | | 61.828.879,03 | 62.504 |
| darunter: | | | | | | |
| an Kreditinstituten | 0,00 | EUR | | | | ( 0 ) |
| an Finanzdienstleistungsinstituten | 3.715.000,00 | EUR | | | | ( 3.715 ) |
| **8. Anteile an verbundenen Unternehmen** | | | | | 0,00 | 0 |
| darunter: | | | | | | |
| an Kreditinstituten | 0,00 | EUR | | | | ( 0 ) |
| an Finanzdienstleistungsinstituten | 0,00 | EUR | | | | ( 0 ) |
| **9. Treuhandvermögen** | | | | | 622.611,99 | 95 |
| darunter: | | | | | | |
| Treuhandkredite | 622.611,99 | EUR | | | | ( 95 ) |
| **10. Ausgleichsforderungen gegen die öffentliche Hand einschließlich Schuldverschreibungen aus deren Umtausch** | | | | | 0,00 | 0 |
| **11. Immaterielle Anlagewerte** | | | | | | |
| a) Selbst geschaffene gewerbliche Schutzrechte und ähnliche Rechte und Werte | | | | 0,00 | | 0 |
| b) entgeltlich erworbene Konzessionen, gewerbliche Schutzrechte und ähnliche Rechte und Werte sowie Lizenzen an solchen Rechten und Werten | | | | 140.242,00 | | 140 |
| c) Geschäfts- oder Firmenwert | | | | 0,00 | | 0 |
| d) geleistete Anzahlungen | | | | 0,00 | | 0 |
| | | | | | 140.242,00 | 140 |
| **12. Sachanlagen** | | | | | 37.306.009,96 | 38.641 |
| **13. Sonstige Vermögensgegenstände** | | | | | 11.918.885,18 | 7.139 |
| **14. Rechnungsabgrenzungsposten** | | | | | 1.938.972,88 | 2.118 |
| **Summe der Aktiva** | | | | | 4.186.396.007,10 | 4.141.493 |

# Passivseite

| | | EUR | EUR | EUR | 31.12.2015 TEUR |
|---|---|---|---|---|---|
| **1. Verbindlichkeiten gegenüber Kreditinstituten** | | | | | |
| a) täglich fällig | | | 2.165.854,44 | | 1.029 |
| b) mit vereinbarter Laufzeit oder Kündigungsfrist | | | 313.111.651,23 | | 312.119 |
| | | | | 315.277.505,67 | 313.148 |
| **2. Verbindlichkeiten gegenüber Kunden** | | | | | |
| a) Spareinlagen | | | | | |
| aa) mit vereinbarter Kündigungsfrist von drei Monaten | | 1.007.174.318,28 | | | 1.023.274 |
| ab) mit vereinbarter Kündigungsfrist von mehr als drei Monaten | | 3.800.335,73 | | | 27.119 |
| | | | 1.010.974.654,01 | | 1.050.393 |
| b) andere Verbindlichkeiten | | | | | |
| ba) täglich fällig | | 2.403.638.484,92 | | | 2.329.862 |
| bb) mit vereinbarter Laufzeit oder Kündigungsfrist | | 24.562.141,36 | | | 27.443 |
| | | | 2.428.200.626,28 | | 2.357.305 |
| | | | | 3.439.175.280,29 | 3.407.698 |
| **3. Verbriefte Verbindlichkeiten** | | | | | |
| a) begebene Schuldverschreibungen | | | 0,00 | | 20 |
| b) andere verbriefte Verbindlichkeiten | | | 0,00 | | 0 |
| darunter: | | | | | |
| Geldmarktpapiere | 0,00 EUR | | | | ( 0 ) |
| eigene Akzepte und Solawechsel im Umlauf | 0,00 EUR | | | | ( 0 ) |
| | | | | 0,00 | 20 |
| **3a. Handelsbestand** | | | | 0,00 | 0 |
| **4. Treuhandverbindlichkeiten** | | | | 622.611,99 | 95 |
| darunter: | | | | | |
| Treuhandkredite | 622.611,99 EUR | | | | ( 95 ) |
| **5. Sonstige Verbindlichkeiten** | | | | 2.731.765,88 | 3.982 |
| **6. Rechnungsabgrenzungsposten** | | | | 1.815.915,19 | 2.452 |
| **7. Rückstellungen** | | | | | |
| a) Rückstellungen für Pensionen und ähnliche Verpflichtungen | | | 42.787.381,00 | | 43.207 |
| b) Steuerrückstellungen | | | 2.940.273,61 | | 4.795 |
| c) andere Rückstellungen | | | 24.290.660,99 | | 22.834 |
| | | | | 70.018.315,60 | 70.836 |
| **8. (weggefallen)** | | | | | |
| **9. Nachrangige Verbindlichkeiten** | | | | 0,00 | 0 |
| **10. Genussrechtskapital** | | | | 0,00 | 0 |
| darunter: | | | | | |
| vor Ablauf von zwei Jahren fällig | 0,00 EUR | | | | ( 0 ) |
| **11. Fonds für allgemeine Bankrisiken** | | | | 49.000.000,00 | 45.000 |
| **12. Eigenkapital** | | | | | |
| a) gezeichnetes Kapital | | | 0,00 | | 0 |
| b) Kapitalrücklage | | | 0,00 | | 0 |
| c) Gewinnrücklagen | | | | | |
| ca) Sicherheitsrücklage | | 297.073.593,79 | | | 285.126 |
| cb) andere Rücklagen | | 0,00 | | | 0 |
| | | | 297.073.593,79 | | 285.126 |
| d) Bilanzgewinn | | | 10.681.018,69 | | 13.135 |
| | | | | 307.754.612,48 | 298.262 |
| **Summe der Passiva** | | | | 4.186.396.007,10 | 4.141.493 |

| | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| **1. Eventualverbindlichkeiten** | | | | | |
| a) Eventualverbindlichkeiten aus weitergegebenen abgerechneten Wechseln | | | 0,00 | | 0 |
| b) Verbindlichkeiten aus Bürgschaften und Gewährleistungsverträgen | | | 155.161.191,78 | | 169.036 |
| c) Haftung aus der Bestellung von Sicherheiten für fremde Verbindlichkeiten | | | 0,00 | | 0 |
| | | | | 155.161.191,78 | 169.036 |
| **2. Andere Verpflichtungen** | | | | | |
| a) Rücknahmeverpflichtungen aus unechten Pensionsgeschäften | | | 0,00 | | 0 |
| b) Platzierungs- und Übernahmeverpflichtungen | | | 0,00 | | 0 |
| c) Unwiderrufliche Kreditzusagen | | | 262.663.858,22 | | 310.578 |
| | | | | 262.663.858,22 | 310.578 |

**Gewinn- und Verlustrechnung**
**für die Zeit vom 1. Januar bis 31. Dezember 2016**

| | | | EUR | EUR | EUR | 1.1.-31.12.2015 TEUR |
|---|---|---|---|---|---|---|
| **1. Zinserträge aus** | | | | | | |
| a) Kredit- und Geldmarktgeschäften | | | 81.935.389,23 | | | 88.178 |
| b) festverzinslichen Wertpapieren und Schuldbuchforderungen | | | 5.469.371,97 | | | 11.045 |
| | | | | 87.404.761,20 | | 99.223 |
| **2. Zinsaufwendungen** | | | | 32.276.072,26 | | 28.253 |
| darunter: aus der Aufzinsung von Rückstellungen | 28.363,79 | EUR | | | | ( 65 ) |
| | | | | | 55.128.688,94 | 70.970 |
| **3. Laufende Erträge aus** | | | | | | |
| a) Aktien und anderen nicht festverzinslichen Wertpapieren | | | | 8.520.204,52 | | 9.534 |
| b) Beteiligungen | | | | 1.789.902,02 | | 1.598 |
| c) Anteilen an verbundenen Unternehmen | | | | 0,00 | | 0 |
| | | | | | 10.310.106,54 | 11.132 |
| **4. Erträge aus Gewinngemeinschaften, Gewinnabführungs- oder Teilgewinnabführungsverträgen** | | | | | 0,00 | 0 |
| **5. Provisionserträge** | | | | 27.356.631,00 | | 26.380 |
| **6. Provisionsaufwendungen** | | | | 1.768.212,79 | | 1.341 |
| | | | | | 25.588.418,21 | 25.040 |
| **7. Nettoertrag des Handelsbestands** | | | | | 0,00 | 0 |
| **8. Sonstige betriebliche Erträge** | | | | | 4.718.618,69 | 4.353 |
| darunter: aus der Fremdwährungsumrechnung | 127.937,31 | EUR | | | | ( 152 ) |
| **9. (weggefallen)** | | | | | | |
| | | | | | 95.745.832,38 | 111.495 |
| **10. Allgemeine Verwaltungsaufwendungen** | | | | | | |
| a) Personalaufwand | | | | | | |
| aa) Löhne und Gehälter | | | 34.299.347,43 | | | 34.818 |
| ab) Soziale Abgaben und Aufwendungen für Altersversorgung und für Unterstützung | | | 10.917.595,30 | | | 13.548 |
| darunter: für Altersversorgung | 3.978.885,40 | EUR | | | | ( 7.120 ) |
| | | | | 45.216.942,73 | | 48.367 |
| b) andere Verwaltungsaufwendungen | | | | 19.982.616,95 | | 19.414 |
| | | | | | 65.199.559,68 | 67.780 |
| **11. Abschreibungen und Wertberichtigungen auf immaterielle Anlagewerte und Sachanlagen** | | | | | 2.096.189,06 | 2.257 |
| **12. Sonstige betriebliche Aufwendungen** | | | | | 5.531.527,17 | 6.055 |
| darunter: aus der Fremdwährungsumrechnung | 1.685,65 | EUR | | | | ( 0 ) |
| aus der Aufzinsung von Rückstellungen | 2.115.382,39 | EUR | | | | ( 2.727 ) |
| **13. Abschreibungen und Wertberichtigungen auf Forderungen und bestimmte Wertpapiere sowie Zuführungen zu Rückstellungen im Kreditgeschäft** | | | | 2.691.304,88 | | 3.386 |
| **14. Erträge aus Zuschreibungen zu Forderungen und bestimmten Wertpapieren sowie aus der Auflösung von Rückstellungen im Kreditgeschäft** | | | | 0,00 | | 0 |
| | | | | | 2.691.304,88 | 3.386 |
| **15. Abschreibungen und Wertberichtigungen auf Beteiligungen, Anteile an verbundenen Unternehmen und wie Anlagevermögen behandelte Wertpapiere** | | | | 1.652.517,05 | | 4.124 |
| **16. Erträge aus Zuschreibungen zu Beteiligungen, Anteilen an verbundenen Unternehmen und wie Anlagevermögen behandelten Wertpapieren** | | | | 0,00 | | 0 |
| | | | | | 1.652.517,05 | 4.124 |
| **17. Aufwendungen aus Verlustübernahme** | | | | | 0,00 | 0 |
| **18. Zuführungen zum Fonds für allgemeine Bankrisiken** | | | | | 4.000.000,00 | 5.000 |
| **19. Ergebnis der normalen Geschäftstätigkeit** | | | | | 14.574.734,54 | 22.894 |
| **20. Außerordentliche Erträge** | | | | 0,00 | | 0 |
| **21. Außerordentliche Aufwendungen** | | | | 0,00 | | 0 |
| **22. Außerordentliches Ergebnis** | | | | | 0,00 | 0 |
| **23. Steuern vom Einkommen und vom Ertrag** | | | | 3.777.297,40 | | 9.641 |
| **24. Sonstige Steuern, soweit nicht unter Posten 12 ausgewiesen** | | | | 116.418,45 | | 118 |
| | | | | | 3.893.715,85 | 9.759 |
| **25. Jahresüberschuss** | | | | | 10.681.018,69 | 13.135 |
| **26. Gewinnvortrag aus dem Vorjahr** | | | | | 0,00 | 0 |
| | | | | | 10.681.018,69 | 13.135 |
| **27. Entnahmen aus Gewinnrücklagen** | | | | | | |
| | | | | | 0,00 | 0 |
| | | | | | 10.681.018,69 | 13.135 |
| **28. Einstellungen in Gewinnrücklagen** | | | | | | |
| | | | | | 0,00 | 0 |
| **29. Bilanzgewinn** | | | | | 10.681.018,69 | 13.135 |

# ANHANG

Der Jahresabschluss wurde nach den für Kreditinstitute geltenden Vorschriften des Handelsgesetzbuches (HGB) und der Verordnung über die Rechnungslegung der Kreditinstitute und Finanzdienstleistungsinstitute (RechKredV) aufgestellt. Die Gliederung der Bilanz und der Gewinn- und Verlustrechnung richtet sich nach den vorgeschriebenen Formblättern.

In Ausübung des Wahlrechtes nach § 11 Satz 3 RechKredV enthalten die zu Posten oder Unterposten der Bilanz nach Restlaufzeiten gegliederten Beträge keine anteiligen Zinsen.

## BILANZIERUNGS- UND BEWERTUNGSMETHODEN

Die Bewertung der Vermögensgegenstände und Schulden entspricht den allgemeinen Bewertungsvorschriften der §§ 252 ff. HGB unter Berücksichtigung der für Kreditinstitute geltenden Sonderregelungen (§§ 340 ff. HGB).

### Forderungen

Forderungen an Kunden und Kreditinstitute (einschließlich Schuldscheindarlehen und Namensschuldverschreibungen) haben wir zum Nennwert bilanziert. Bei der Auszahlung von Darlehen einbehaltene Disagien werden auf deren Laufzeit bzw. Festzinsbindungsdauer verteilt.
Für akute Ausfallrisiken haben wir bei Forderungen an Kunden in Höhe des zu erwartenden Ausfalls Einzelwertberichtigungen vorgenommen. Außerdem haben wir nach den Erfahrungen der Vergangenheit bemessene Pauschalwertberichtigungen auf den latent gefährdeten Forderungsbestand gebildet.

### Wertpapiere

Die Wertpapiere der Liquiditätsreserve werden nach dem strengen Niederstwertprinzip mit ihren Anschaffungskosten bzw. mit den niedrigeren Börsenkursen oder den niedrigeren beizulegenden Werten bewertet.

Bei einzelnen Wertpapieren war zum Bilanzstichtag kein aktiver Markt vorhanden. In diesen Fällen haben wir den beizulegenden Wert anhand eines Barwertmodells (Discounted Cash Flow-Methode) auf Basis der zum 31.12.2016 erwarteten Zahlungsströme ermittelt. Die Diskontierung erfolgte mit einem laufzeitadäquaten risikolosen Zins zuzüglich angemessener Bonitäts- bzw. Liquiditätsspreads. Die zugrunde gelegten Bonitäts- bzw. Liquiditätsspreads wurden teilweise aus Vergleichsanleihen abgeleitet.

**Beteiligungen**

Beteiligungen werden nach dem strengen Niederstwertprinzip zu Anschaffungskosten oder zum niedrigeren Wert am Bilanzstichtag bewertet.

**Immaterielle Anlagewerte und Sachanlagen**

Sachanlagen und immaterielle Vermögensgegenstände werden mit ihren Anschaffungs- oder Herstellungskosten, vermindert um planmäßige Abschreibungen, bilanziert. In 2008 erfolgte bei neu erworbenen beweglichen Vermögensgegenständen der Wechsel von der degressiven auf die lineare Abschreibung auf der Grundlage der von der Finanzverwaltung veröffentlichten AfA-Tabellen. Bis 2009 erworbene oder selbst erstellte Gebäude werden planmäßig mit den höchsten steuerlich zulässigen Sätzen abgeschrieben. Ab 2010 angeschaffte oder selbst erstellte Gebäude werden linear über eine Nutzungsdauer von 33 Jahren bei gewerblicher Nutzung bzw. von 50 Jahren bei wohnwirtschaftlicher Nutzung abgeschrieben. Geringwertige Vermögensgegenstände, deren Anschaffungskosten 150 Euro ohne Umsatzsteuer nicht übersteigen, werden im Jahr der Anschaffung sofort als Aufwand erfasst. Geringwertige Vermögensgegenstände von über 150 Euro bis einschließlich 410 Euro jeweils ohne Umsatzsteuer werden seit 2010 im Anschaffungsjahr voll abgeschrieben.

Die in der Vergangenheit vorgenommenen steuerlichen Abschreibungen i.S.d. § 254 HGB a.F. werden vollständig fortgeführt.

**Sonstige Vermögensgegenstände**

Die sonstigen Vermögensgegenstände werden nach dem strengen Niederstwertprinzip zu Anschaffungskosten bewertet.

**Verbindlichkeiten**

Die Verbindlichkeiten werden mit ihrem Erfüllungsbetrag passiviert. Der Unterschied zwischen dem Erfüllungs- und dem Ausgabebetrag wird unter den Rechnungsabgrenzungen ausgewiesen und zeitanteilig erfolgswirksam aufgelöst.

**Rückstellungen**

Rückstellungen werden in Höhe des Erfüllungsbetrags gebildet, der nach vernünftiger kaufmännischer Beurteilung notwendig ist. Soweit erforderlich werden künftige Preis- und Kostensteigerungen berücksichtigt. Bei Rückstellungen mit einer Ursprungslaufzeit von einem Jahr oder weniger erfolgt keine Abzinsung. Die übrigen Rückstellungen werden gemäß § 253 Abs. 2 HGB mit dem Rechnungszins der Rückstellungsabzinsungsverordnung (RückAbzinsV) abgezinst.

Rückstellungen für Pensionen werden nach versicherungsmathematischen Grundsätzen entsprechend dem Teilwertverfahren auf der Grundlage der Heubeck Richttafeln 2005 G ermittelt. Sie wurden aufgrund der Neuregelung des § 253 Abs. 2 HGB erstmals pauschal mit dem von der Deutschen Bundesbank veröffentlichten durchschnittlichen Marktzinssatz aus den vergangenen zehn Geschäftsjahren abgezinst, der sich bei einer angenommenen Restlaufzeit von 15 Jahren ergibt (§ 253 Abs. 2 Satz 2 HGB). Dieser Zinssatz beträgt 4,03 %. Aus der Berechnung der Rückstellungen mit dem durchschnittlichen Marktzinssatz der vergangenen zehn Geschäftsjahre und der vergangenen sieben Geschäftsjahre ergibt sich ein Unterschiedsbetrag von 3.538 TEUR. Bei der Ermittlung der Rückstellungen für Pensionen wurden jährliche Lohn- und Gehaltssteigerungen von 2,25 % (ohne Karrieretrend) und Rentensteigerungen von jährlich 2,25 % unterstellt. Der Karrieretrend wurde gesondert berücksichtigt. Bei der Aufzinsung der Pensionsrückstellungen wurde unterstellt, dass sich der Verpflichtungsumfang sowie der Diskontsatz erst zum Ende der Periode ändern. Die Erfolge aus der Änderung des Abzinsungssatzes bzw. Zinseffekten einer geänderten Schätzung der Restlaufzeit werden erstmals nicht mehr unter dem Personalaufwand bzw. als sonstige betriebliche Erträge erfasst, sondern saldiert mit dem Aufzinsungsergebnis im sonstigen betrieblichen Aufwand bzw. Ertrag (im Geschäftsjahr: Minderung des betrieblichen Aufwands in Höhe von 400 TEUR) erfasst. Die Vorjahreszahlen wurden nicht angepasst.

Für die Verpflichtung zur Leistung von Beihilfen an Pensionäre und aktive Mitarbeiter für die Zeit ihres Ruhestandes in Krankheits-, Geburts- und Todesfällen wird eine Rückstellung gebildet. Der Bemessung wird die aktuelle Sterbetafel des BMF (Bundesministerium der Finanzen) zur Bewertung einer lebenslangen Nutzung oder Leistung gemäß § 14 Abs. 1 BewG und die Vereinfachungsregelung des § 253 Abs. 2 Satz 2 HGB für die Ermittlung des Abzinsungssatzes zugrunde gelegt. Bei dieser sowie allen übrigen wesentlichen Rückstellungen wird die Änderung des Verpflichtungsumfangs bei der Aufzinsung unterjährig berücksichtigt. Die Erfolge aus Änderungen des Abzinsungssatzes werden im Falle von Rückstellungen für Bankprodukte im Zinsbereich, ansonsten unter den sonstigen betrieblichen Aufwendungen ausgewiesen. Die Erfolge aus Zinseffekten einer geänderten Schätzung der Restlaufzeit werden in dem GuV-Posten ausgewiesen, in dem auch die Aufwendungen zur Rückstellungsdotierung ausgewiesen werden. Auch bei der Ermittlung der Aufzinsungserfolge dieser Rückstellungen haben wir unterstellt, dass eine Änderung des Abzinsungssatzes erst zum Ende der Periode eintritt.

**Verlustfreie Bewertung der zinsbezogenen Geschäfte des Bankbuchs (Zinsbuchs)**

Zur Ermittlung eines ggf. bestehenden Verpflichtungsüberschusses ist eine Gesamtbetrachtung aller bilanziellen und außerbilanziellen Finanzinstrumente des Bankbuchs unter Berücksichtigung aller bis zur vollständigen Abwicklung zu erwartenden Risiko- und Verwaltungskosten vorgenommen worden. Hierbei ist die Ermittlung anhand einer barwertigen Betrachtung erfolgt. Eine Rückstellung war nicht erforderlich.

**Fonds für allgemeine Bankrisiken**

Im Geschäftsjahr wurde eine weitere Dotierung des Fonds für allgemeine Bankrisiken gemäß § 340g HGB vorgenommen.

**Derivative Finanzinstrumente**

Die zur Steuerung der globalen Zinsänderungsrisiken abgeschlossenen Zinsswaps wurden in die verlustfreie Bewertung der zinsbezogenen Geschäfte des Bankbuchs (Zinsbuchs) einbezogen und waren somit nicht gesondert zu bewerten.

**Währungsumrechnung**

Die Währungsumrechnung erfolgt gemäß § 256a i.V.m. § 340h HGB. Eine besondere Deckung gemäß § 340h HGB sehen wir als gegeben an, soweit eine Identität von Währung und Betrag der gegenläufigen Geschäfte je Währung vorliegt. Die Umrechnungsergebnisse aus Geschäften, die in die besondere Deckung einbezogen sind, werden saldiert je Währung in den sonstigen betrieblichen Erträgen bzw. Aufwendungen ausgewiesen. Zum Jahresende nicht abgewickelte Termingeschäfte werden mit den entsprechenden Terminkursen umgerechnet. Die Aufwendungen und Erträge aus der Währungsumrechnung außerhalb der besonderen Deckung werden unter den sonstigen betrieblichen Aufwendungen und Erträgen ausgewiesen.

## ANGABEN UND ERLÄUTERUNGEN ZUR BILANZ

## Aktivseite

**Posten 3: Forderungen an Kreditinstitute**

| | 31.12.2016 | 31.12.2015 |
|---|---|---|
| In diesem Posten sind enthalten: | TEUR | TEUR |
| - Forderungen an die eigene Girozentrale | 35.809 | 84.071 |
| | | |
| Die Forderungen gliedern sich nach ihren Restlaufzeiten wie folgt: | | |
| Posten 3 b) andere Forderungen | | |
| - bis drei Monate | 1.101 | 1.196 |
| - mehr als drei Monate bis ein Jahr | - | - |
| - mehr als ein Jahr bis fünf Jahre | 40.000 | - |
| - mehr als fünf Jahre | 45.000 | 85.000 |

**Posten 4: Forderungen an Kunden**

| | 31.12.2016 | 31.12.2015 |
|---|---|---|
| In diesem Posten sind enthalten: | TEUR | TEUR |
| - Forderungen an Unternehmen, mit denen ein Beteiligungsverhältnis besteht | 18.893 | 20.134 |

Die Forderungen gliedern sich nach ihren Restlaufzeiten wie folgt:

| | | |
|---|---|---|
| - bis drei Monate | 65.412 | 97.178 |
| - mehr als drei Monate bis ein Jahr | 202.687 | 162.403 |
| - mehr als ein Jahr bis fünf Jahre | 742.013 | 726.370 |
| - mehr als fünf Jahre | 1.688.954 | 1.607.261 |
| - mit unbestimmter Laufzeit | 77.285 | 87.095 |

**Posten 5: Schuldverschreibungen und andere festverzinsliche Wertpapiere**

| In diesem Posten sind enthalten: | 31.12.2016 TEUR | 31.12.2015 TEUR |
|---|---|---|
| - börsenfähige Wertpapiere (ohne antizipative Zinsen), davon sind | 685.260 | 769.956 |
| - börsennotiert | 685.260 | 769.956 |
| - nicht börsennotiert | - | - |
| - im folgenden Geschäftsjahr fällige Wertpapiere | 75.185 | 110.373 |

**Posten 6: Aktien und andere nicht festverzinsliche Wertpapiere**

| In diesem Posten sind enthalten: | 31.12.2016 TEUR | 31.12.2015 TEUR |
|---|---|---|
| - börsenfähige Wertpapiere, davon sind | 49.768 | 49.237 |
| - börsennotiert | 49.768 | 49.237 |
| - nicht börsennotiert | - | - |

**Anteile an Investmentvermögen**

An folgenden Investmentvermögen (international ausgerichtete Spezialfonds) halten wir mehr als 10 % der Anteile:

Wir halten einen gemischten Fonds mit Anlageschwerpunkt festverzinsliche Wertpapiere, Publikumsfonds und Aktien mit einem Marktwert von 215.919 TEUR und einem Buchwert von 213.893 TEUR. Die im Geschäftsjahr erfolgten Ertragsausschüttungen betrugen 4.569 TEUR. Eine Rückgabe der Anteile ist täglich möglich.

Wir halten einen Immobilienfonds mit Anlageschwerpunkt Immobilien mit einem Marktwert von 35.846 TEUR und einem Buchwert von 32.915 TEUR. Die im Geschäftsjahr erfolgten Ertragsausschüttungen betrugen 3.505 TEUR. Eine Rückgabe der Anteile ist nur unter Abgabe einer unwiderruflichen Erklärung möglich. Die Rücknahme erfolgt spätestens am letzten Bankgeschäftstag des übernächsten Kalenderquartals, welches auf die Rückgabeerklärung folgt.

Wir halten einen gemischten LCR-Fonds mit Anlageschwerpunkt festverzinsliche Wertpapiere und Publikumsfonds mit einem Marktwert von 100 TEUR und einem Buchwert in gleicher Höhe. Im Geschäftsjahr erhielten wir keine Ausschüttungen. Eine Rückgabe der Anteile ist täglich möglich.

Zusätzlich halten wir Anteile eines Publikumsfonds mit Anlageschwerpunkt deutsche Jumbopfandbriefe mit einem Marktwert von 49.768 TEUR und einem Buchwert von 49.768 TEUR. Im Geschäftsjahr erhielten wir eine Ertragsausschüttung in Höhe von 447 TEUR. Eine Rückgabe der Anteile ist täglich möglich.

**Posten 7: Beteiligungen**

Unter den Beteiligungen werden die Anteile an folgenden Unternehmen ausgewiesen. Die Unternehmen weisen nach den letzten uns vorliegenden Jahresabschlüssen Eigenkapital und Ergebnis wie folgt aus:

| Name und Sitz der Gesellschaft | Höhe des Kapitalanteils | Eigenkapital | Ergebnis des Geschäftsjahres |
|---|---|---|---|
| | % | TEUR | TEUR |
| Deka Erwerbsgesellschaft mbH & Co. KG, Neuhardenberg | 0,39 | 1.808.466 ( 31.12.2015 ) | - - |
| Deutsche SparkassenLeasing AG & Co. KG, Bad Homburg | 0,31 | 616.480 ( 30.09.2015 ) | 45.432 ( 2014/2015 ) |
| LBS- Beteiligungsgesellschaft mbH & Co. KG, München | 2,28 | 440.831 ( 31.12.2015 ) | - - |
| Versicherungsbeteiligungsgesellschaft bayerischer und rheinland-pfälzischer Sparkassen mbH & Co. KG, München | 2,06 | 1.308.789 ( 30.06.2016 ) | - - |

Darüber hinaus ist die Sparkasse Regensburg an folgenden Unternehmen beteiligt, die keinen Jahresabschluss offenzulegen haben:

| Name und Sitz der Gesellschaft | Höhe des Kapitalanteils |
|---|---|
| | % |
| Sparkassenverband Bayern Körperschaft des öffentlichen Rechts, München (Stammkapital I) | 2,28 |
| Sparkassenverband Bayern Körperschaft des öffentlichen Rechts, München (Stammkapital II) | 1,39 |

**Posten 9: Treuhandvermögen**

Das Treuhandvermögen betrifft in voller Höhe Forderungen an Kunden.

**Posten 12: Sachanlagen**

| | 31.12.2016 | 31.12.2015 |
|---|---|---|
| In diesem Posten sind enthalten: | TEUR | TEUR |
| - im Rahmen der eigenen Tätigkeit genutzte Grundstücke und Bauten | 30.439 | 31.245 |
| - Betriebs- und Geschäftsausstattung | 4.542 | 4.926 |

**Posten 14: Rechnungsabgrenzungsposten**

| | 31.12.2016 | 31.12.2015 |
|---|---|---|
| In diesem Posten sind enthalten: | TEUR | TEUR |
| - Agio aus Forderungen | 328 | 392 |
| - Disagio aus Verbindlichkeiten | 255 | 495 |

**Latente Steuern**

Aufgrund abweichender Ansatz- und Bewertungsvorschriften zwischen Handels- und Steuerbilanz und außerbilanzieller Korrekturen inklusive negativer/positiver Anleger-Aktien-/Immobiliengewinne bestehen zum 31. Dezember 2016 Steuerlatenzen. Dabei wird der Gesamtbetrag der künftigen Steuerbelastungen durch absehbare Steuerentlastungen überdeckt. Eine passive Steuerabgrenzung war demzufolge nicht erforderlich, auf den Ansatz aktiver latenter Steuern wurde verzichtet. Die wesentlichen künftigen Steuerbelastungen resultieren aus unterschiedlichen Wertansätzen bei den Gebäuden. Die zum Ausgleich der künftigen Steuerbelastungen benötigten absehbaren künftigen Steuerentlastungen ergeben sich im Wesentlichen aus unterschiedlichen bilanziellen Ansätzen bei den Forderungen an Kunden, anderen nicht festverzinslichen Wertpapieren und Rückstellungen. Die Ermittlung der Differenzen erfolgte unter Zugrundelegung eines Steuersatzes von 30,014 % (Körperschaft- und Gewerbesteuer zuzüglich Solidaritätszuschlag). Aus Beteiligungen an Personengesellschaften resultierende, lediglich der Körperschaftsteuer und dem Solidaritätszuschlag unterliegende Differenzen wurden bei den Berechnungen mit 15,825 % bewertet. Verlustvorträge, die zu einer Steuerentlastung führen und kompensatorisch in die Berechnung der latenten Steuern einzubeziehen sind, bestehen nicht.

## Entwicklung des Anlagevermögens

| | | | Entwicklung des Anlagevermögens (Angaben in TEUR) | |
|---|---|---|---|---|
| | | | Immaterielle Anlagewerte | Sachanlagen |
| Entwicklung der Anschaffungs- /Herstellungskosten | Stand am 1.1. des Geschäftsjahres | | 602 | 91.170 |
| | Zugänge | | 91 | 868 |
| | Abgänge | | -111 | -1.858 |
| | Umbuchungen | | - | -82 |
| | Stand am 31.12. des Geschäftsjahres | | 582 | 90.098 |
| Entwicklung der kumulierten Abschreibungen | Stand am 1.1. des Geschäftsjahres | | 462 | 52.529 |
| | Abschreibungen im Geschäftsjahr | | 90 | 2.006 |
| | Zuschreibungen im Geschäftsjahr | | - | - |
| | Änderung der gesamten Abschreibungen | im Zusammenhang mit Zugängen | - | - |
| | | im Zusammenhang mit Abgängen | -111 | -1.661 |
| | | im Zusammenhang mit Umbuchungen | - | -82 |
| | Stand am 31.12. des Geschäftsjahres | | 441 | 52.792 |
| Buchwerte | Stand am 31.12. des Geschäftsjahres | | 140 | 37.306 |
| | Stand am 31.12. des Vorjahres | | 140 | 38.641 |

Soweit das bewegliche Sachanlagevermögen über der Grenze der geringwertigen Wirtschaftsgüter (GWG) liegt aber 3.000 EUR nicht übersteigt, wird als Abgangszeitpunkt für den Anlagespiegel pauschal der Zeitpunkt drei Jahre nach der vollständigen Abschreibung herangezogen.

| Bilanzposten | Bilanzwert 31.12.2015* TEUR | Netto-veränderungen TEUR | Bilanzwert 31.12.2016* TEUR |
|---|---|---|---|
| Forderungen an Kreditinstitute** | 85.000 | - | 85.000 |
| Beteiligungen | 62.504 | -675 | 61.829 |

* ohne antizipative Zinsen und Abgrenzungen
**bei den angegebenen Beträgen handelt es sich um eine Namensschuldverschreibung und um Schuldscheindarlehen

## Passivseite

**Posten 1: Verbindlichkeiten gegenüber Kreditinstituten**

| | 31.12.2016 | 31.12.2015 |
|---|---|---|
| In diesem Posten sind enthalten: | TEUR | TEUR |
| - Verbindlichkeiten gegenüber der eigenen Girozentrale | 271.428 | 258.588 |
| - durch eigene Vermögenswerte besicherte Verbindlichkeiten | 264.492 | 253.738 |

Die Verbindlichkeiten gliedern sich nach ihren Restlaufzeiten wie folgt:

| | | |
|---|---|---|
| Posten 1 b) mit vereinbarter Laufzeit oder Kündigungsfrist | | |
| - bis drei Monate | 50.117 | 60.188 |
| - mehr als drei Monate bis ein Jahr | 20.527 | 18.615 |
| - mehr als ein Jahr bis fünf Jahre | 95.934 | 93.973 |
| - mehr als fünf Jahre | 142.202 | 135.067 |

**Posten 2: Verbindlichkeiten gegenüber Kunden**

| | 31.12.2016 | 31.12.2015 |
|---|---|---|
| In diesem Posten sind enthalten: | TEUR | TEUR |
| - Verbindlichkeiten gegenüber Unternehmen, mit denen ein Beteiligungsverhältnis besteht | 3.175 | 2.629 |

Die Verbindlichkeiten gliedern sich nach ihren Restlaufzeiten wie folgt:

| | | |
|---|---|---|
| Posten 2 a ab) Spareinlagen mit vereinbarter Kündigungsfrist von mehr als drei Monaten | | |
| - bis drei Monate | 53 | 9.746 |
| - mehr als drei Monate bis ein Jahr | 1.290 | 14.644 |
| - mehr als ein Jahr bis fünf Jahre | 2.458 | 2.729 |
| - mehr als fünf Jahre | - | - |
| Posten 2 b bb) andere Verbindlichkeiten mit vereinbarter Laufzeit oder Kündigungsfrist | | |
| - bis drei Monate | 18.607 | 13.969 |
| - mehr als drei Monate bis ein Jahr | 2.728 | 4.318 |
| - mehr als ein Jahr bis fünf Jahre | 2.868 | 8.805 |
| - mehr als fünf Jahre | 359 | 351 |

**Posten 3: Verbriefte Verbindlichkeiten**

| | 31.12.2016 | 31.12.2015 |
|---|---|---|
| Posten 3 a) begebene Schuldverschreibungen | TEUR | TEUR |
| - im folgenden Geschäftsjahr fällige Wertpapiere | - | 20 |

**Posten 4: Treuhandverbindlichkeiten**

Die Treuhandverbindlichkeiten entfallen in voller Höhe auf Verbindlichkeiten gegenüber Kreditinstituten.

**Posten 6: Rechnungsabgrenzungsposten**

| | 31.12.2016 | 31.12.2015 |
|---|---|---|
| In diesem Posten sind enthalten | TEUR | TEUR |
| - Disagio aus Forderungen | 634 | 925 |

## Mehrere Posten betreffende Angaben

**Vermögensgegenstände und Schulden in fremder Währung**

Auf Fremdwährung lauten Vermögensgegenstände im Gesamtbetrag von 10.248 TEUR und Verbindlichkeiten im Gesamtbetrag von 10.256 TEUR.

## ANGABEN UND ERLÄUTERUNGEN ZU DEN POSTEN UNTER DEM BILANZSTRICH

**Posten 1: Eventualverbindlichkeiten**

Hinsichtlich der unter den Eventualverbindlichkeiten ausgewiesenen Verbindlichkeiten aus Bürgschaften und Gewährleistungen sind bis zum Aufstellungszeitpunkt des Jahresabschlusses keine signifikanten Erkenntnisse und Informationen bekannt geworden, die eine Inanspruchnahme daraus erwarten lassen. Bei unseren Kreditgewährungen werden in diesem Posten für Kreditnehmer übernommene Bürgschaften und Gewährleistungsverträge erfasst. Auf Basis der regelmäßigen Bonitätsbeurteilungen unserer Kunden im Rahmen unseres Kreditrisikomanagementprozesses gehen wir für die hier ausgewiesenen Beträge davon aus, dass sie nicht zu einer wirtschaftlichen Belastung der Sparkasse führen werden. Auch haben sich im letzten Jahr nur unbedeutende Ansprüche Dritter ergeben. Zum Abschlussstichtag bestanden keine Rückgriffsforderungen, Regress- oder Erstattungsansprüche.

**Posten 2: Andere Verpflichtungen**

Wir gehen derzeit davon aus, dass die unwiderruflichen Kreditzusagen von den Kreditnehmern in Anspruch genommen werden. In den unwiderruflichen Kreditzusagen sind nach Erkenntnissen der Sparkasse keine ausfallgefährdeten Kredite enthalten.

## ANGABEN UND ERLÄUTERUNGEN ZUR GEWINN- UND VERLUSTRECHNUNG

**Posten 1. a): Zinserträge aus Kredit- und Geldmarktgeschäften**

Im Rahmen der Mindestreservehaltung und der Bargeldversorgung hat die Sparkasse im abgelaufenen Geschäftsjahr negative Zinsen an die Europäische Zentralbank gezahlt.
Ebenso kommt es aufgrund der augenblicklichen Zinssituation dazu, dass die Sparkasse für die Geldanlagen bei anderen Kreditinstituten sowie bei der Gewährung von Darlehen an Kunden eine Vergütung zahlen muss.
Diese Negativzinsen in Höhe von 163 TEUR (im Vorjahr 0,05 TEUR) wurden mit den Zinserträgen, die üblicherweise bei derartigen Geschäftsvorfällen anfallen, verrechnet.

**Posten 2: Zinsaufwendungen**

Bei einzelnen Geschäftsvorfällen kommt es aufgrund der augenblicklichen Zinssituation dazu, dass die Sparkasse für die Hereinnahme von Einlagen bzw. bei einer Geldaufnahme eine Vergütung erhält. Diese Negativzinsen wurden in Höhe von 271 TEUR (im Vorjahr 115 TEUR) mit den Zinsaufwendungen, die üblicherweise bei derartigen Geschäftsvorfällen anfallen, verrechnet.

**Posten 5: Provisionserträge – Dienstleistungen für Verwaltung und Vermittlung**

Die wesentlichen an Dritte erbrachten Dienstleistungen für Verwaltung und Vermittlung entfallen auf die Vermittlung von Produkten der Verbundpartner (Versicherung, Bausparverträge, Immobilien, Investmentzertifikate und Fondsanteile).

**Posten 8: Sonstige betriebliche Erträge**

| | 31.12.2016 | 31.12.2015 |
|---|---|---|
| In diesem Posten sind folgende wesentliche Einzelposten enthalten: | TEUR | TEUR |
| - Erstattungszinsen KSt | 761 | - |
| - Swaptionprämien | 689 | 484 |
| - Auflösungen von Rückstellungen, die nicht das Kreditgeschäft betreffen | 629 | 1.704 |
| - Veräußerung von Grundstücken und Gebäuden | 544 | 82 |
| - Grundstückserträge | 539 | 525 |

**Posten 12: Sonstige betriebliche Aufwendungen**

| In diesem Posten sind folgende wesentliche Einzelposten enthalten: | 31.12.2016<br>TEUR | 31.12.2015<br>TEUR |
|---|---|---|
| - Aufwendungen aus der Aufzinsung bzw. der Änderung des Diskontierungssatzes von Personalrückstellungen | 2.019 | 2.550 |
| - Aufwendungen aus Spenden | 1.219 | 1277 |
| - Aufwendungen für Schadensfälle | 888 | 618 |
| - Aufwendungen aus Restrukturierungen | 336 | 642 |

**Posten 29: Bilanzgewinn**

Der Verwaltungsrat wird den Jahresabschluss zum 31. Dezember 2016 in seiner für den 20.06.2017 vorgesehenen Sitzung feststellen. Der Vorschlag für die Verwendung des Ergebnisses sieht vor, den Bilanzgewinn vollständig der Sicherheitsrücklage zuzuführen.

**Ausschüttungssperre**

Am Abschlussstichtag bestehen gemäß § 253 Abs. 6 Satz 2 HGB (Unterschiedsbetrag aus der Berechnung der Rückstellungen für Altersversorgungsverpflichtungen mit dem durchschnittlichen Marktzinssatz der vergangenen zehn Geschäftsjahre und der vergangenen sieben Geschäftsjahre) ausschüttungsgesperrte Beträge in Höhe von 3.538 TEUR.

## SONSTIGE ANGABEN

### Derivative Finanzinstrumente

Die Arten und der Umfang derivativer Finanzinstrumente, bezogen auf die Nominalwerte der zu Grunde liegenden Referenzwerte, sind in folgender Aufstellung zusammengestellt:

| Derivative Finanzinstrumente | | | | |
|---|---|---|---|---|
| | Nominalbeträge | | | |
| | nach Restlaufzeiten | | | |
| - in TEUR - | < 1 Jahr | 1-5 Jahre | > 5 Jahre | insgesamt |
| **Zinsrisiken** | | | | |
| Zinsswaps | --- | 30.000 | 365.000 | 395.000 |
| **davon Handelsgeschäfte** | **---** | **---** | **---** | **---** |
| **davon Deckungsgeschäfte** | **---** | **---** | **---** | **---** |
| **Währungsrisiken** | | | | |
| Devisentermingeschäfte | 9.440 | --- | --- | 9.440 |
| **davon Handelsgeschäfte** | **---** | **---** | **---** | **---** |
| **davon Deckungsgeschäfte** | **4.720** | **---** | **---** | **4.720** |

Nicht zum beizulegenden Zeitwert bilanzierte derivative Finanzinstrumente:

| - in TEUR - | Nominal-beträge | Zeitwert positiv | Zeitwert negativ | Buchwert | Bilanzausweis |
|---|---|---|---|---|---|
| **Zinsrisiken** | | | | | |
| Zinsswaps[1] | 395.000 | 1.580 | 67.411 | --- | --- |
| **Währungsrisiken** | | | | | |
| Devisentermingeschäfte | 9.440 | 36 | 25 | --- | --- |

[1] Zinsswaps mit einem negativen Marktwert von 67.411 TEUR und einem positiven Marktwert von 1.580 TEUR dienen der Steuerung des globalen Zinsänderungsrisikos und wurden in die verlustfreie Bewertung der zinsbezogenen Geschäfte des Bankbuchs (Zinsbuchs) einbezogen. Daher sind sie nicht gesondert zu bewerten.

Für Zinsswaps werden die beizulegenden Zeitwerte als Barwert zukünftiger Zinszahlungsströme auf Basis der Marktzinsmethode ermittelt. Dabei finden die Swap-Zinskurven zum Bilanzstichtag Verwendung, die den Veröffentlichungen Reuters entnommen werden.

Die beizulegenden Zeitwerte der Devisentermingeschäfte werden aus den Barwerten der gegenläufigen Zahlungsströme (in Fremdwährung und in Euro) unter Anwendung der Zero-Zinsstrukturkurve der jeweiligen Währung zum Bilanzstichtag ermittelt, die den Veröffentlichungen Reuters entnommen werden. Die Umrechnung erfolgt anhand der zuletzt verfügbaren Währungs-Spotkurse.

**Angaben zu nicht passivierten pensionsähnlichen Verpflichtungen**

Der Träger bzw. die Sparkasse ist Mitglied der Zusatzversorgungskasse der bayerischen Gemeinden (ZVK). Versichert sind bei dieser Kasse alle Beschäftigten, die unter den Geltungsbereich des TVöD-S fallen. Der TVöD-S gewährt den unter den Geltungsbereich des TVöD-S fallenden Beschäftigten grundsätzlich einen Anspruch auf Verschaffung einer Zusatzversorgung. Der Anspruch entsteht bei beiderseitiger Tarifgebundenheit oder wenn die Arbeitsvertragsparteien die Anwendbarkeit des TVöD-S im Arbeitsvertrag vereinbart haben. Grundlage der Versicherung bei der ZVK ist seit dem 01.01.2002 der Tarifvertrag über die zusätzliche Altersvorsorge der Beschäftigten des öffentlichen Dienstes (ATV-K). Nach wie vor gewährt die ZVK eine Alters- und Hinterbliebenenrente sowie Erwerbsminderungsrenten. Die Höhe der Versorgungszusage errechnet sich nach der Betriebsrentenformel der ZVK. Das Punktemodell basiert auf dem Prinzip, dass Beiträge zur Zusatzversorgung, multipliziert mit einem Altersfaktor, Versorgungspunkte für die Beschäftigten ergeben. Es werden Leistungen zugesagt, die sich ergeben würden, wenn eine Gesamtbeitragsleistung von 4 % des zusatzversorgungspflichtigen Entgelts vollständig in ein kapital-gedecktes System einbezahlt werden würde.

Bei der Zusatzversorgungskasse der bayerischen Gemeinden werden seit der Umstellung vom Gesamtversorgungsmodell auf ein betriebsrentenrechtliches Punktemodell sowohl Umlagen als auch Beiträge erhoben. Die Erhebung von Umlagen ist erforderlich, um die Anwartschaften und laufenden Rentenverpflichtungen aus der Zeit vor der Umstellung finanzieren zu können. Der Umlagesatz beträgt 3,75 % der Bemessungsgrundlage. Der Zusatzbeitrag (4 % der Bemessungsgrundlage) dient dem Aufbau einer Kapitaldeckung für Anwartschaften, die seit der Umstellung entstehen. Die Aufwendungen der Sparkasse belaufen sich in 2016 auf 2.383 TEUR. Die Summe der umlagepflichtigen Gehälter beträgt 30.744 TEUR.

Der für den derzeit nicht vorgesehenen Fall einer Beendigung der Mitgliedschaft oder eines Wechsels in einen kapitalgedeckten Abrechnungsverband nach der Satzung der ZVK anfallende Ausgleichsbetrag belief sich am Ende 2016 auf 67.835 TEUR. Der Ausgleichsbetrag wurde nach versicherungsmathematischen Grundsätzen von der ZVK berechnet und umfasst den Barwert der Leistungsverpflichtungen der ZVK, die aus der Mitgliedschaft der Sparkasse Regensburg im umlagefinanzierten Abrechnungsverband resultieren. Für die Ermittlung wird ein Rechnungszins von zurzeit 1,25 % (gemäß Deckungsrückstellungs-Verordnung) herangezogen; das Kassenvermögen der ZVK (Kollektivvermögen aller Mitglieder im umlagefinanzierten Abrechnungsverband) bleibt unberücksichtigt. Im Hinblick auf die Vergleichbarkeit des bei Ermittlung des Ausgleichsbetrages zu Grunde gelegten Rechnungszinses mit dem für die Berechnung der unmittelbaren Pensionsverpflichtungen verwendeten Abzinsungssatz geben wir informativ zusätzlich den Betrag an, der sich bei einem Zinssatz von 4,03 % ergeben hätte. Dieser Betrag beläuft sich auf 47.488 TEUR.

**Nicht realisierte Reserven**

Die Sparkasse kann im Geschäftsjahr 2017 nicht realisierte Reserven in Wertpapieren in Höhe von 4.397 TEUR dem haftenden Eigenkapital nach § 10 KWG in der bis zum 31.12.2013 geltenden Fassung im Rahmen der Altbestandsregelung zurechnen.

**Gesamtbezüge des Vorstands und des Verwaltungsrats**

Den Mitgliedern des Vorstands wurden für ihre Tätigkeit im Geschäftsjahr Gesamtbezüge in Höhe von 1.020 TEUR gewährt, die Mitglieder des Verwaltungsrats erhielten Gesamtbezüge in Höhe von 425 TEUR.

**Pensionsrückstellungen und –zahlungen für bzw. an frühere Mitglieder des Vorstands und deren Hinterbliebene**

An frühere Mitglieder des Vorstands und deren Hinterbliebene wurden 580 TEUR gezahlt; die Pensionsrückstellungen für diesen Personenkreis betrugen am 31.12.2016 9.454 TEUR.

**Kreditgewährung an den Vorstand und Verwaltungsrat**

Die Sparkasse hat am 31.12.2016 Kredite an Mitglieder des Vorstands in Höhe von 214 TEUR und an die Mitglieder des Verwaltungsrats in Höhe von 2.272 TEUR gewährt.

**Honorare für den Abschlussprüfer**

Die Prüfungsstelle des Sparkassenverbandes Bayern ist gemäß § 22 SpkO sowie § 340k HGB gesetzlicher Abschlussprüfer unseres Jahresabschlusses. Für Abschlussprüfungsleistungen fielen im Geschäftsjahr 2016 Aufwendungen in Höhe von 236 TEUR an. Die Aufwendungen für andere Bestätigungsleistungen belaufen sich auf 91 TEUR, davon betrafen 4 TEUR das Vorjahr.

## Verrwaltungsrat

Vorsitzende/r

Joachim Wolbergs
*Oberbürgermeister*
*der Stadt Regensburg*
*bis 30.04.2016*

Tanja Schweiger
*Landrätin*
*des Landkreises Regensburg*
*ab 01.05.2016*

Stellvertretende/r Vorsitzende/r

Tanja Schweiger
*Landrätin*
*des Landkreises Regensburg*
*bis 30.04.2016*

Joachim Wolbergs
*Oberbürgermeister*
*der Stadt Regensburg*
*ab 01.05.2016*

Weitere Stellvertreter (beratend)

Willi Hogger
*stellvertretender Landrat*
*des Landkreises Regensburg*

Gertrud Maltz-Schwarzfischer
*Bürgermeisterin*
*der Stadt Regensburg*

Mitglieder

Peter Aumer
*Referent Konzessionsverträge*

Ludwig Gallmeier
*Steuerberater und Rechtsbeistand*

Dr. Georg Haber
*Geschäftsführer der Haber & Brandner GmbH*

Norbert Hartl
*Technischer Fernmeldeoberamtsrat i.R.*

Johann Mayer
*Landwirt und Direktvermarkter*

Christa Meier
*Rektorin i.R.*

Horst Meierhofer
*Geschäftsführer des Landesverbands der Energie-und Wasserwirtschaft Hessen/Rheinland-Pfalz e.V.*

Richard Meindl
*Geschäftsführer der Meindl GmbH*

Hans Rothammer
*Steuerberater*
*ab 01.10.2016*

Christian Schlegl
*Controller*

Harald Stadler
*Polizeibeamter*

Georg Thaler
*Bürgermeister i.R.*

Volker Tretzel
*Geschäftsführer BTT Bauteam Tretzel GmbH*
*bis 30.09.2016*

Josef Troidl
*Physiotherapeut*

Josef Weitzer
*Stv. Gesamtbetriebsratsvorsitzender*
*Krones AG*

## Vorstand

| Vorsitzender | Stv. Vorsitzender | Mitglied |
|---|---|---|
| Franz-Xaver Lindl | Dr. Rudolf Gingele<br>*bis 31.12.2016* | Dr. Markus Witt<br>*bis 31.12.2016* |
| | Dr. Markus Witt<br>*ab 01.01.2017* | Manfred Pitzl<br>*ab 01.01.2017* |

**Mitarbeiter / -innen**

| Im Jahresdurchschnitt wurden beschäftigt: | 2016 |
|---|---|
| Vollzeitkräfte | 433 |
| Teilzeit- und Ultimokräfte | 254 |
| | 687 |
| Auszubildende | 47 |
| Insgesamt | 734 |

Regensburg, den 21.03.2017

**Sparkasse Regensburg**

**Vorstand**

| | | |
|---|---|---|
| Franz-Xaver Lindl, VV | Dr. Markus Witt, stv. VV | Manfred Pitzl, VM |

Regensburg, den 27.03.2017

**Sparkasse Regensburg**

**Vorsitzende des Verwaltungsrats**

Tanja Schweiger, Landrätin

**Offenlegung nach § 26a Abs. 1 Satz 2 KWG**

**Anlage zum Jahresabschluss gemäß § 26a Abs. 1 Satz 2 KWG**

**zum 31. Dezember 2016**

**("Länderspezifische Berichterstattung")**

Die Sparkasse Regensburg hat keine Niederlassungen im Ausland. Sämtliche nachfolgende Angaben entstammen dem Jahresabschluss zum 31. Dezember 2016 und beziehen sich ausschließlich auf ihre Geschäftstätigkeit als regional tätige Sparkasse in der Bundesrepublik Deutschland. Die Tätigkeit der Sparkasse Regensburg besteht im Wesentlichen darin, Einlagen oder andere rückzahlbare Gelder von Privat- und Firmenkunden entgegenzunehmen und Kredite für eigene Rechnung zu gewähren.

Die Sparkasse Regensburg definiert den Umsatz als Saldo aus der Summe folgender Komponenten der Gewinn- und Verlustrechnung nach HGB: Zinserträge, Zinsaufwendungen, laufende Erträge aus Aktien etc., Erträge aus Gewinngemeinschaften etc., Provisionserträge, Provisionsaufwendungen, Nettoertrag des Handelsbestands und sonstige betriebliche Erträge. Der Umsatz beträgt für den Zeitraum 1. Januar bis 31. Dezember 2016 95.746 TEUR.

Die Anzahl der Lohn- und Gehaltsempfänger in Vollzeitäquivalenten beträgt im Jahresdurchschnitt 576.

Der Gewinn vor Steuern beträgt 14.575 TEUR.

Die Steuern auf den Gewinn betragen 3.777 TEUR. Die Steuern betreffen laufende Steuern.

Die Sparkasse Regensburg hat im Geschäftsjahr keine öffentlichen Beihilfen erhalten.

**Bestätigungsvermerk des Abschlussprüfers**

Wir haben den Jahresabschluss - bestehend aus Bilanz, Gewinn- und Verlustrechnung sowie Anhang - unter Einbeziehung der Buchführung und den Lagebericht der Sparkasse Regensburg für das Geschäftsjahr vom 01.01.2016 bis 31.12.2016 geprüft. Die Buchführung und die Aufstellung von Jahresabschluss und Lagebericht nach den deutschen handelsrechtlichen Vorschriften liegen in der Verantwortung des Vorstandes der Sparkasse. Unsere Aufgabe ist es, auf der Grundlage der von uns durchgeführten Prüfung eine Beurteilung über den Jahresabschluss unter Einbeziehung der Buchführung und über den Lagebericht abzugeben.

Wir haben unsere Jahresabschlussprüfung nach § 317 HGB unter Beachtung der vom Institut der Wirtschaftsprüfer in Deutschland e. V. (IDW) festgestellten deutschen Grundsätze ordnungsmäßiger Abschlussprüfung vorgenommen. Danach ist die Prüfung so zu planen und durchzuführen, dass Unrichtigkeiten und Verstöße, die sich auf die Darstellung des durch den Jahresabschluss unter Beachtung der Grundsätze ordnungsmäßiger Buchführung und durch den Lagebericht vermittelten Bildes der Vermögens-, Finanz- und Ertragslage wesentlich auswirken, mit hinreichender Sicherheit erkannt werden. Bei der Festlegung der Prüfungshandlungen werden die Kenntnisse über die Geschäftstätigkeit und über das wirtschaftliche und rechtliche Umfeld der Sparkasse sowie die Erwartungen über mögliche Fehler berücksichtigt. Im Rahmen der Prüfung werden die Wirksamkeit des rechnungslegungsbezogenen internen Kontrollsystems sowie Nachweise für die Angaben in Buchführung, Jahresabschluss und Lagebericht überwiegend auf der Basis von Stichproben beurteilt. Die Prüfung umfasst die Beurteilung der angewandten Bilanzierungsgrundsätze und der wesentlichen Einschätzungen des Vorstandes sowie die Würdigung der Gesamtdarstellung des Jahresabschlusses und des Lageberichts. Wir sind der Auffassung, dass unsere Prüfung eine hinreichend sichere Grundlage für unsere Beurteilung bildet.

Unsere Prüfung hat zu keinen Einwendungen geführt.

Nach unserer Beurteilung aufgrund der bei der Prüfung gewonnenen Erkenntnisse entspricht der Jahresabschluss den gesetzlichen Vorschriften und vermittelt unter Beachtung der Grundsätze ordnungsmäßiger Buchführung ein den tatsächlichen Verhältnissen entsprechendes Bild der Vermögens-, Finanz- und Ertragslage der Sparkasse. Der Lagebericht steht in Einklang mit dem Jahresabschluss, entspricht den gesetzlichen Vorschriften, vermittelt insgesamt ein zutreffendes Bild von der Lage der Sparkasse und stellt die Chancen und Risiken der zukünftigen Entwicklung zutreffend dar.

München, den 30. Mai 2017

PRÜFUNGSSTELLE
DES SPARKASSENVERBANDES BAYERN

PRÜFUNGSSTELLE DES SPARKASSENVERBANDES BAYERN

Öttl
Wirtschaftsprüfer

Bichlmaier
Wirtschaftsprüfer

# LAGEBERICHT

Inhalt:

**1. Grundlagen der Sparkasse**

**2. Wirtschaftsbericht**
2.1 Gesamtwirtschaftliche und branchenbezogene Rahmenbedingungen
2.2 Geschäftsverlauf
2.2.1 Finanzielle Leistungsindikatoren
2.2.2 Nichtfinanzielle Leistungsindikatoren
2.3 Vermögenslage
2.4 Finanzlage
2.5 Ertragslage
2.6 Zusammenfassende Beurteilung der Geschäftsentwicklung und der Lage der Sparkasse

**3. Risikobericht**
3.1 Risikomanagement
3.2 Risikoarten und deren Absicherung
3.2.1 Adressenausfallrisiken
3.2.2 Marktpreisrisiken
3.2.3 Liquiditätsrisiken
3.2.4 Operationelle Risiken
3.2.5 Sonstige Risiken
3.3 Zusammenfassende Beurteilung der Risikolage der Sparkasse

**4. Prognose-/Chancenbericht**

## 1. Grundlagen der Sparkasse

Die Sparkasse Regensburg ist ein kommunales Wirtschaftsunternehmen in der Rechtsform einer rechtsfähigen Anstalt des öffentlichen Rechts nach dem bayerischen Sparkassengesetz. Sie untersteht der Aufsicht durch die Bundesanstalt für Finanzdienstleistungen sowie der Regierung der Oberpfalz.

Grundsätzlich betreibt die Sparkasse alle banküblichen Geschäfte, soweit es das bayerische Sparkassengesetz und die aufgrund dieses Gesetzes erlassenen Rechtsverordnungen oder die Satzung der Sparkasse vorsehen.

Träger und gleichzeitig Eigentümer der Sparkasse ist der Zweckverband Sparkasse Regensburg, dem als Mitglieder die Stadt und der Landkreis Regensburg angehören. Der Geschäftsbezirk der Sparkasse umfasst den räumlichen Wirkungsbereich des Sparkassenzweckverbandes.

Die Organe der Sparkasse sind der Vorstand und der Verwaltungsrat. Der Verwaltungsrat bestimmt die Richtlinien der Geschäftspolitik und überwacht die Geschäftsführung des Vorstands. Dem Verwaltungsrat der Sparkasse Regensburg gehören 16 stimmberechtigte und 2 nicht-stimmberechtigte Mitglieder an. Der Vorstand leitet die Sparkasse in eigener Verantwortung, vertritt sie und führt ihre Geschäfte. Die Zusammensetzung der Organe ist im Anhang dargestellt.

Die Sparkasse ist Mitglied des Sparkassenverbandes Bayern und über diesen dem Deutschen Sparkassen- und Giroverband angeschlossen. Sie haftet mit den anderen bayerischen Sparkassen gemäß § 4 Abs. 2 und § 8 Abs. 2 der Satzung des Sparkassenverbandes Bayern für die Verbindlichkeiten des Sparkassenverbandes Bayern.

Die Sparkasse ist Mitglied im Sparkassenstützungsfonds des Sparkassenverbandes Bayern und damit Teil des Sicherungssystems der deutschen Sparkassenorganisation. Dem Sicherungssystem der deutschen Sparkassenorganisation sind die Sparkassen, Landesbanken und Landesbausparkassen angeschlossen. Als institutsbezogenes Sicherungssystem mit anerkannter Einlagensicherung schützt dieses System den Bestand der angeschlossenen Institute und erfüllt zugleich die gesetzlichen Anforderungen an ein Einlagensicherungssystem im Sinne des Einlagensicherungsgesetzes (EinSiG).

Die Sparkasse unterliegt dem Regionalprinzip. Dabei steht im Vordergrund, auf Grundlage der Markt- und Wettbewerbserfordernisse vorrangig im Geschäftsgebiet den Wettbewerb zu stärken und die angemessene und ausreichende Versorgung aller Bevölkerungskreise, der Wirtschaft und der öffentlichen Hand mit geld- und kreditwirtschaftlichen Leistungen auch in der Fläche sicherzustellen. Dabei berücksichtigt die Sparkasse die wirtschaftlichen und gesellschaftlichen Verhältnisse in der Region.

Um unserem Auftrag gerecht zu werden, unterhielten wir zum 31.12.2016 im Geschäftsbezirk neben der in Regensburg gelegenen Hauptstelle 47 Geschäftsstellen, 11 SB-Geschäftsstellen und an zwei Standorten im Geschäftsgebiet Geldautomaten. Damit soll der räumlichen Kundennähe und der Präsenz in der Fläche weiter Rechnung getragen werden.

## 2. Wirtschaftsbericht

### 2.1 Gesamtwirtschaftliche und branchenbezogene Rahmenbedingungen

**Volkswirtschaftliches Umfeld**

Die deutsche Wirtschaft konnte sich 2016 einmal mehr im oberen Mittelfeld der europäischen Wachstumsraten platzieren und erreichte mit 1,9 % Wachstum (Vorjahr 1,7 %) wieder einen sehr guten Wert. Getragen wurde diese positive Entwicklung allein von der Binnennachfrage. Bei den Investitionen war es vor allem die Baubranche, die mit einem realen Zuwachs von 3,1 % deutlich wuchs. Überproportional entwickelte sich dabei der private Wohnungsbau (+4,3 %). Der öffentliche Bau und die Bauinvestitionen der Unternehmen blieben dahinter zurück. Die Konsumausgaben des Staates steuerten 2016 mit einem Plus von 4,2 % – unter anderem durch Mehrausgaben für die Zuwanderung von Flüchtlingen - einen starken Impuls zum Wachstum bei. Der private Konsum (+2,0 %) als das größte Teilaggregat des realen Bruttoinlandsproduktes (BIP) bildete 2016 – wie schon im Jahr davor – die wichtigste Basis für die binnenwirtschaftliche Expansion. Der private Verbrauch stützte sich auf die weiterhin gute Lage am Arbeitsmarkt und auf steigende Lohneinkommen. Die Zahl der in Deutschland Erwerbstätigen erhöhte sich noch einmal um 1,0 % auf knapp 43,5 Millionen. Die amtliche Arbeitslosenquote reduzierte sich auf 6,1 % (Vorjahr 6,4 %). Die Reallöhne in Deutschland legten 2016 erneut kräftig zu. Zu dem Kaufkraftgewinn der Löhne trug neben den Nominallohnsteigerungen vor allem die niedrige Inflationsrate bei. Die Verbraucherpreise stiegen in Deutschland im Jahresdurchschnitt 2016 gemessen an der nationalen statistischen Definition um 0,5 % (Vorjahr 0,3 %). Dies war vor allem auf die sehr niedrigen Energiepreise zurückzuführen.

**Branchensituation**

Die Finanzbranche bewegt sich weiterhin in einem sehr anspruchsvollen Umfeld. Die Institute müssen sich den Herausforderungen eines historisch niedrigen Marktzinsniveaus mit Negativzinsen und einer flachen Zinsstrukturkurve stellen. Das Niedrigzinsumfeld belastet nicht nur Sparer und Anleger sondern führt auch bei der Kreditwirtschaft zu einem Rückgang des Zinsüberschusses. Auch die Wettbewerbsintensität bleibt im Hinblick auf neue Anbieter hoch. Zusätzlich wird die Kreditbranche mit immer neuen Regulierungsmaßnahmen konfrontiert, die auch in den Überprüfungs- und Bewertungsprozessen (SREP) der Aufsichtsbehörden ihren Niederschlag finden.

Die Europäische Zentralbank (EZB) hat die im gesamten Euroraum niedrigen Inflationsraten (Jahresdurchschnitt Kernrate +0,9 %) zum Anlass für eine weitere geldpolitische Expansion genommen. Im März 2016 hat die EZB ihren Zins für die Einlagefazilität noch tiefer ins Negative abgesenkt, von zuvor -0,3 % auf bis heute gültige -0,4 %. Außerdem hat sie ihr „Quantitative Easing“ verlängert und beschleunigt. Unter dem „Asset Purchase Programme“ kaufte die EZB, neben Covered Bonds und Asset Backed Securities im Gros vor allem Staatsanleihen. Das Volumen dieser Ankäufe wurde ab April 2016 von 60 auf 80 Milliarden Euro monatlich erhöht. Schließlich wurde 2016 eine neue Serie von Lang-

fristtendern aufgelegt, bei denen unter bestimmten Bedingungen (nachgewiesene Ausweitung der Kredite an Kunden) Kreditinstitute auch zu Negativzinsen Zentralbankgeld aufnehmen können.

Die Aktienmärkte reagierten auf die expansive Geldpolitik grundsätzlich positiv. Der Deutsche Aktienindex (DAX) entwickelte sich stufenweise nach oben, wobei die Wahl von Donald Trump zum US-Präsidenten im Herbst 2016 den DAX nochmal kräftig steigen ließ. Auf Jahressicht legte der DAX um 6,6 % zu (Vorjahr 9,6 %).

**Regionale Wirtschaftsentwicklung**

Gemäß „Konjunkturbericht Jahresbeginn 2017" der IHK Regensburg zeigt sich die konjunkturelle Entwicklung in der Oberpfalz und dem Landkreis Kelheim zum Jahreswechsel robust, 52 % der Unternehmen bewerten ihre Geschäftslage als „gut". Für die heimische Industrie ist die Lage so gut wie seit 2011 nicht mehr. Aufgrund von Auftragszuwächsen und als Folge der niedrigsten Lagerbestände seit sechs Jahren, weitete die Branche ihre Produktion vielerorts aus. Die Eurozone und wieder ansteigende Geschäfte mit Asien und China erweisen sich als Stütze der exportorientierten Wirtschaft. Handel und Dienstleister sind nicht mehr ganz so optimistisch, sie bewegen sich aber weiterhin auf hohem Niveau. Die Unternehmen haben aber auch mit Gegenwind zu kämpfen: Geopolitische und wirtschaftliche Unsicherheiten hemmen grundsätzlich die Investitionsneigung. Bei all den internationalen Unsicherheiten zählt die Wirtschaft auf den Binnenmarkt. In den kommenden Monaten rechnet ein Fünftel der Unternehmen mit einer besseren Geschäftslage. Per Saldo wollen 10 % der Unternehmen ihre Beschäftigtenzahl erhöhen, beste Arbeitsplatzperspektiven herrschen dabei in der Industrie und im Dienstleistungssektor.

Die Stadt Regensburg wird nach den Erfahrungen des Stadtoberhauptes als „starker Standort" beurteilt. Regensburg ist wirtschaftlich breit aufgestellt und weist eine Beschäftigungsquote auf, die es in dieser Höhe in Regensburg noch nie gegeben hat. Für Regensburg wurde Ende 2016 eine Arbeitslosenquote in Höhe von 2,4 % verzeichnet (Vorjahr: 2,5 %). Hohe Beschäftigungszahlen in Kombination mit einem sehr hohen Gewerbesteueraufkommen sind Ausdruck der wirtschaftlichen Prosperität der Stadt.

Regensburg zählt zu den begehrtesten Wohn- und Lebensräumen in ganz Bayern. Die Symbiose aus historischem Erbe und aufstrebender Wirtschaftsregion macht Regensburg als Wohnort ausgesprochen attraktiv. Laut Landesamt für Statistik und LBS Bayern wird in keiner anderen Stadt in Bayern so intensiv neuer Wohnraum erstellt wie in Regensburg. Auch der Landkreis Regensburg liegt in Bezug auf die genehmigten Wohneinheiten pro 1.000 Einwohner über dem bayerischen Schnitt. Die hohe Nachfrage nach Bauplätzen und Wohnungen treibt die Preise. Die Schaffung von ausreichend Wohnraum ist daher eine der drängendsten Aufgaben der Politik.

Die Sparkasse Regensburg profitiert von dem wirtschaftlichen Wohlstand der Stadt und des Landkreises und sieht darin auch für die Zukunft weiterhin gutes Chancenpotenzial. Die Wettbewerbssituation im Geschäftsgebiet der Sparkasse Regensburg ist von einer größeren Anzahl konkurrierender

Banken geprägt, der Markt ist hart umkämpft. Hauptkonkurrenten sind die Genossenschaftsbanken. Neben den „stationären“ Konkurrenten vor Ort sind es in verstärktem Maße auch neue Vertriebswege (z. B. Internet), die eine weitere Herausforderung für die Geschäftsstrategie der Sparkasse darstellen. Um unter den genannten Rahmenbedingungen auch weiterhin erfolgreich zu sein, wird die Sparkasse Regensburg in 2017 ihr Filialnetz umstrukturieren sowie den Medialen Vertrieb weiter ausbauen.

## 2.2 Geschäftsverlauf

### 2.2.1 Finanzielle Leistungsindikatoren

**Die wichtigsten Zahlen der Bilanz zum 31.12.2016 und ihre Veränderungen:**

| | Bilanz 2016 | Veränderungen 2016 | | Veränderungen 2015 | |
|---|---|---|---|---|---|
| Position | Mio. EUR | Mio. EUR | % | Mio. EUR | % |
| Geschäftsvolumen [1] | 4.341,6 | 31,0 | 0,7 % | 112,3 | 2,7 % |
| Bilanzsumme | 4.186,4 | 44,9 | 1,1 % | 110,9 | 2,8 % |
| Verbindlichkeiten gegenüber Kunden | 3.439,2 | 31,5 | 0,9 % | 177,8 | 5,5 % |
| Kundenkreditvolumen [2] | 3.196,9 | 36,2 | 1,1 % | 224,7 | 7,7 % |
| Eigenanlagen [3] | 1.105,5 | -185,8 | -14,4 % | -80,4 | -5,9 % |
| Verbindlichkeiten gegenüber Kreditinstituten | 315,3 | 2,1 | 0,7 % | -84,8 | -21,3 % |

[1] Bilanzsumme und Eventualverbindlichkeiten (Passivposition 1 unter dem Bilanzstrich)
[2] inklusive Verbindlichkeiten aus Bürgschaften und Gewährleistungsverträgen sowie unwiderrufliche Kreditzusagen
[3] eigene Wertpapiere und Forderungen an Kreditinstitute

Im Geschäftsjahr 2016 stieg die Bilanzsumme auf 4.186,4 Mio. EUR. Sie liegt somit um 1,1 % über dem Wert des Vorjahres. Die positive Dynamik des Vorjahres (+110,9 Mio. EUR bzw. 2,8 %) konnten wir in der Bilanz 2016 nicht erreichen. Der Anstieg in der Bilanz (+44,9 Mio. EUR) ergab sich unter anderem durch erhöhte Volumina in den Bereichen Kundenkreditvolumen und Verbindlichkeiten gegenüber Kunden. Das Geschäftsvolumen (Bilanzsumme und Eventualverbindlichkeiten) erhöhte sich um 31,0 Mio. EUR bzw. 0,7 % auf 4.341,6 Mio. EUR.

Das Gesamtvolumen der Verbindlichkeiten gegenüber Kunden nahm um 31,5 Mio. EUR bzw. 0,9 % auf 3.439,2 Mio. EUR zu. Bei der ursprünglichen Planung der Kundeneinlagen sind wir von höheren Zuwachszahlen ausgegangen. Im Vergleich mit dem durchschnittlichen Einlagenwachstum aller bayerischen Sparkassen erzielte unser Haus im Segment Privatkunden einen höheren, bei den Unternehmen einen niedrigeren Wert.

Aufgrund des niedrigen Zinsniveaus bevorzugten unsere Kunden insgesamt, wie im Vorjahr, kurzfristige Anlagen. Privatanleger investierten die Gelder vorrangig in Sichteinlagen; moderat rückläufig war bei dieser Zielgruppe die Bestandsentwicklung bei den Spareinlagen. Bei Unternehmen und Öf-

fentlichen Haushalten waren im Bereich der täglich fälligen Verbindlichkeiten Liquiditätsabflüsse zu verzeichnen. Diese Abflüsse waren auch zurückzuführen auf das ab 1. Oktober 2016 eingeführte Verwahrentgelt für Firmenkunden auf besonders hohe Einlagen.

Das Kundenkreditvolumen nahm in 2016 zu. Mit einem Bestandswachstum um 36,2 Mio. EUR bzw. +1,1 % auf 3.196,9 Mio. EUR konnte die im Vorjahr erzielte, sehr hohe Wachstumsdynamik nicht erreicht werden. Mit dieser Bestandserhöhung im Kundenkreditvolumen sind unsere Erwartungen nur zum Teil eingetreten. Jedoch sehen wir uns beim Kundenkreditvolumen, nach den sehr starken Wachstumszahlen der letzten beiden Jahre, gefestigt auf einem hohen Niveau.

Sehr erfreulich war, dass die Bestandserhöhung – wie bereits im Vorjahr - zum größten Teil von der breiten Basis der Privatkunden getragen wurde. Bei den Unternehmen blieben die Bestandzahlen in etwa auf Vorjahresniveau.

Mit ca. 49 % hatten private Wohnbaufinanzierungen wesentlichen Anteil am Kundenkreditvolumen.
Die unwiderruflichen Kreditzusagen, als weiterer Bestandteil des Kundenkreditvolumens, gingen im Berichtsjahr um 15,4 % zurück (Vorjahr: +20,2 %).

Der Eigenanlagenbestand ist im Berichtsjahr 2016 um 185,8 Mio. EUR bzw. 14,4 % auf 1.105,5 Mio. EUR zurückgegangen. Bedingt wurde diese Entwicklung durch eine nur teilweise Wiederanlage fälliger Wertpapiere. Daneben erfolgten, im Rahmen einer beginnenden Portfolio-Neustrukturierung, Verkäufe im Bereich „Aktien und andere nicht festverzinsliche Wertpapiere“.

Zur Entwicklung im Dienstleistungsgeschäft verweisen wir auf Punkt 2.5 Ertragslage (Provisionsüberschuss).

### 2.2.2 Nichtfinanzielle Leistungsindikatoren

<u>Produktpolitik / Wirtschaftlichkeit</u>

Die weiter anhaltende Niedrigzinsphase sowie die weltweiten Entwicklungen in der Politik, insbesondere der „Brexit“ sowie das Wahlergebnis in den USA, beeinflussten die Anlageentscheidungen unserer Kunden. So hatte oftmals Liquidität Vorrang vor Rendite bei überschaubarem Risiko. Daneben gehörten Sachwerte weiterhin zu den bevorzugten Produkten.
Die Sparkasse Regensburg stellt in der Anlageberatung konsequent die Ziele und Bedürfnisse der Kunden in den Mittelpunkt, um auf dieser Basis - gemeinsam mit den Kunden - die richtige Produktauswahl treffen zu können.

Neben offenen Immobilienfonds sowie Teilschutzprodukten auf Aktien, haben sich unsere Kunden oft für eine professionell gemanagte Vermögensverwaltung der DEKA entschieden, die sie individuell nach ihren Bedürfnissen und nach ihrer individuellen Risikobereitschaft auswählten. Die Kundenentscheidungen wurden durch die weiterhin positive Entwicklung an den Märkten unterstützt.

Die positive Entwicklung des Kreditgeschäfts wurde getragen von der anhaltend hohen Nachfrage nach Immobilien im Raum Regensburg. Der Erfolg in diesem Bereich ist der Spezialisierung unserer Berater zuzuschreiben. Sie erstellen für unsere Kunden aus den Produkten der Sparkasse Regensburg und unserer Verbundpartner die individuell passende Finanzierung.

Im Bereich der Absicherung unserer Kunden standen zum einen die Altersvorsorge und zum anderen die Grundabsicherung im Bereich der Sachversicherungen im Mittelpunkt. Viele Kunden haben sich neu für ein Girokonto bei der Sparkasse Regensburg entschieden. Dies gilt sowohl für den privaten als auch für den gewerblichen Bereich.

Der vorgenommene Weg der Wachstumsstrategie im gewerblichen Bereich wird weiterhin konsequent verfolgt. Der Ausbau des Empfehlungsmanagements, die Steigerung der Marktanteile und eine konsequentere Ausrichtung auf die gewerblichen Kundenbedürfnisse werden auch in den nächsten Jahren zu den großen Herausforderungen gehören. Einflussfaktoren wie die weiter bestehenden Negativzinsen wirken sich auf das Anlage- und Finanzierungsgeschäft aus.

Die Gesamtzufriedenheit befragter Kunden konnte insgesamt im Firmen-, Gewerbe- und Geschäftskundenbereich wie auch im Segment der Heilberufe im Jahr 2016 gesteigert werden.

## Investitionen / Umweltschutz

Die Investitionen des Jahres 2016 waren geprägt durch den großen Themenschwerpunkt Energieeinsparung. Dabei wurden – anknüpfend an das Vorjahr - energetische Einzelmaßnahmen umgesetzt, die nachhaltig den Energieverbrauch reduzieren.

Gleichzeitig haben wir weiter in die Sicherheitseinrichtungen in den Geschäftsstellen investiert. Dabei sorgten wir unter anderem für ein höchstes Maß an Sicherheit für unsere Kunden durch Modernisierung der Technik unserer Selbstbedienungsgeräte.

## Personal- und Sozialbereich

Die Gesamtzahl der im Jahresdurchschnitt Beschäftigten (gem. § 285 Nr. 7 HGB ohne Mitarbeiter während Elternzeit/Sonderurlaub/Altersteilzeit-Freistellungsphase) hat sich im Berichtsjahr von 768 auf 734 Mitarbeiter zum 31.12.2016 verändert; davon sind 433 Vollzeitmitarbeiter, 254 Teilzeitmitarbeiter und 47 Auszubildende.
Die Qualität von Führungskräften und Mitarbeitern ist der wichtigste Erfolgsfaktor der Sparkasse Regensburg. Wir schaffen das passende Umfeld durch eine solide Ausbildung sowie umfassende Weiterbildungs- und Karrieremöglichkeiten in der Region.
Im Herbst begann eine neue Runde des bewährten Förderprogramms Experte. 17 talentierte und motivierte Kolleginnen und Kollegen aus Vertrieb und Betrieb wurden von ihren Führungskräften

dafür empfohlen. Die Teilnehmer qualifizieren sich daraufhin in den nächsten 2 Jahren für eine höherwertige Berater-, Spezialisten oder Führungsposition.

Vergütung ist eines der Instrumente der Sparkasse Regensburg zur Umsetzung der strategischen Leitlinie „Bester Finanzdienstleister der Region". Aus diesem Grund ist die leistungsabhängige, übertarifliche Vergütung aller Mitarbeiter an die strategischen Handlungsfelder Kundenzufriedenheit, Qualität der ganzheitlichen Beratung sowie Prozessoptimierung geknüpft.

Soziales Engagement

Als regional verankertes Unternehmen übernehmen wir auch Verantwortung für das Gemeinwohl. Die umfangreiche Förderung von gesellschaftlichen und sozialen Projekten im Geschäftsjahr 2016 macht dieses Selbstverständnis der Sparkasse deutlich.

In der Sparte Breiten- und Spitzensport haben wir rund 200 Sportvereine in der Stadt und im Landkreis Regensburg finanziell unterstützt. Viele Veranstaltungen wurden durch uns erst möglich. Ähnlich engagiert waren wir bei der Förderung von Kunst und Kultur. Große Musik-Ereignisse standen dabei im Mittelpunkt. Im sozialen Bereich schufen wir für viele Initiativen und Projekte die nötige finanzielle Basis für erfolgreiches Arbeiten.

Die Hälfte der Mitarbeiter unseres Hauses hat sich 2016 bei den „Helfer-Wochen" der Sparkasse Regensburg engagiert. Sie haben während ihrer Freizeit unentgeltlich in gemeinwohlorientierten und sozialen Einrichtungen gearbeitet.

In 2017 plant die Sparkasse Regensburg wieder den „Bürgerpreis" zu verleihen. Alle Ehrenamtlichen in der Stadt und im Landkreis Regensburg können sich darum bewerben. Der „Sparkassen-Bürgerpreis" ist mit einem Preisgeld von 25 TEUR im Bundesvergleich einer der am höchsten ausgestatteten Preise zur Anerkennung ehrenamtlichen Engagements.

### 2.3 Vermögenslage

Die Bilanzstruktur der Sparkasse wird in der nachfolgenden Tabelle dargestellt:

| | 2016<br>Mio. EUR | 2015<br>Mio. EUR | 2016<br>in % BS | 2015<br>in % BS |
|---|---|---|---|---|
| **AKTIVA** | | | | |
| Barreserve | 190,0 | 58,4 | 4,5 % | 1,4 % |
| Forderungen an Kreditinstitute | 122,1 | 150,5 | 2,9 % | 3,6 % |
| Forderungen an Kunden | 2.777,1 | 2.681,1 | 66,3 % | 64,8 % |
| Eigene Wertpapiere | 983,4 | 1.140,9 | 23,5 % | 27,6 % |
| Beteiligungen | 61,8 | 62,5 | 1,5 % | 1,5 % |
| Immaterielle Anlagewerte u. Sachanlagen | 37,4 | 38,8 | 0,9 % | 0,9 % |
| Sonstiges | 14,5 | 9,4 | 0,4 % | 0,2 % |
| Bilanzsumme | 4.186,4 | 4.141,5 | 100,0 % | 100,0 % |
| davon Anlagevermögen | 184,3 | 186,3 | | |
| **PASSIVA** | | | | |
| Verbindlichkeiten gegenüber Kreditinstituten | 315,3 | 313,1 | 7,5 % | 7,6 % |
| Verbindlichkeiten gegenüber Kunden | 3.439,2 | 3.407,7 | 82,1 % | 82,2 % |
| Eigenkapital | 307,8 | 298,3 | 7,3 % | 7,2 % |
| Fonds für allgemeine Bankenrisiken | 49,0 | 45,0 | 1,2 % | 1,1 % |
| Sonstiges | 75,2 | 77,4 | 1,9% | 1,9% |
| Bilanzsumme | 4.186,4 | 4.141,5 | 100,0 % | 100,0 % |

Die Bilanzstruktur der Aktiv- und Passivseite ist im Wesentlichen unverändert geblieben. Die Bilanzsumme erhöhte sich per 31.12.2016 um 44,9 Mio. EUR. Nicht in der Bilanzsumme enthalten sind die Volumina derivativer Geschäfte wie Zinssicherungsgeschäfte (Swaps) oder Devisentermingeschäfte. Hinsichtlich Art und Umfang des Derivategeschäftes verweisen wir auf unsere Angaben im Anhang.

Der Anstieg der Bilanzsumme ist hauptsächlich bedingt durch die positive Entwicklung sowohl der Forderungen an Kunden als auch der Verbindlichkeiten gegenüber Kunden (vgl. dazu bei Punkt 2.2.1 die Ausführungen zu Kundenkreditvolumen).

Die Positionen Barreserve und Forderungen an Kreditinstitute müssen gemeinsam betrachtet werden. Beide fungieren unter anderem als Liquiditätsspeicher. In der Entwicklung des Saldos aus beiden Positionen (+103,2 Mio. EUR gegenüber 2015) spiegelt sich die Liquidität wider, die aus nicht wiederangelegten, fälligen Wertpapieren sowie aus dem Verkauf von Anteilen an einem Spezialfonds

entstand. Teile dieser Liquidität wurden Anfang 2017 dazu verwendet, um bestehende kapitalmarktorientierte Refinanzierungen zurückzuführen.

Die Bewertung der aktiven und passiven Bilanzpositionen entspricht den gesetzlichen Bestimmungen. Die Bewertungsmethoden finden sich im Anhang. Der Wertpapierbestand ist ausnahmslos zum strengen Niederstwertprinzip bewertet, es bestehen stille Reserven. Die gebildeten Wertberichtigungen und Rückstellungen tragen den Risiken im Kreditgeschäft und den sonstigen Verpflichtungen ausreichend Rechnung. Außerdem bestehen weitere Vorsorgereserven nach § 340f HGB.

Zusammen mit der vom Verwaltungsrat noch zu beschließenden Zuführung des Bilanzgewinns wird sich das Eigenkapital auf 307,8 Mio. EUR erhöhen – das entspricht einer Steigerung von 3,2 % gegenüber dem Vorjahr. Darüber hinaus konnte die Sparkasse in 2016 die zusätzlichen, regulatorischen Eigenmittelbestandteile stärken (siehe Punkt 2.5 Ertragslage).

Die Eigenkapitalanforderungen wurden im Berichtsjahr, wie prognostiziert, jederzeit eingehalten. Die zur Deckung der aufsichtsrechtlichen Anforderungen vorhandenen Eigenmittel übertreffen die Anforderungen (Mindestwerte inklusive Kapitalerhaltungspuffer: Gesamtkapitalquote 10,025 %, Kernkapitalquote 8,025 %). Zum Bilanzstichtag liegt die gemäß Artikel 92 CRR ermittelte Gesamtkapitalquote als Relation der Eigenmittel zum Gesamtrisikobetrag, insbesondere bestehend aus Kreditrisiken, Marktrisiken und operationalen Risiken, bei 13,8 % (Vorjahr: 12,9 % gemäß CRR). Die Kernkapitalquote zum Bilanzstichtag liegt bei 11,4 %. Die Sparkasse weist damit eine ausreichende Kapitalbasis auf.

### 2.4 Finanzlage

Die Zahlungsfähigkeit der Sparkasse Regensburg war – wie im Vorjahr eingeschätzt - im Geschäftsjahr 2016 aufgrund der Liquiditätsvorsorge jederzeit gegeben.

Die wesentliche Liquiditätsquelle der Sparkasse Regensburg bildete im abgelaufenen Geschäftsjahr das breit angelegte Privatkundengeschäft. Die eingeräumten Kreditlinien bei der Bayerischen Landesbank und der DekaBank wurden durch Tages- und Kündigungsgelder in Anspruch genommen. Refinanzierungsgeschäfte bei der Deutschen Bundesbank, in Form von Offenmarktgeschäften, wurden in 2016 nicht genutzt. Zur Erfüllung der Mindestreservevorschriften wurde entsprechendes Guthaben bei der Zentralbank unterhalten.

Die KWG-rechtlichen Vorschriften hinsichtlich der Liquidität wurden eingehalten. Zum Jahresende errechnete sich eine nach der Liquiditätsverordnung (LiqV) berechnete Liquiditätskennzahl (Untergrenze 1,0) von 2,8 so dass die Liquidität wie auch im gesamten Geschäftsjahr nach den Vorgaben der Liquiditätsverordnung als ausreichend anzusehen ist. Die Anforderungen der LiqV wurden in 2016 deutlich überschritten.

Die Liquiditätskennzahl lag in 2016 zwischen den Werten von 2,8 und 3,3 (Vorjahr 2,3 bis 3,3). Die Kennziffer lag somit im Berichtsjahr durchgängig über dem im Risikohandbuch festgelegten Min-

destwert von 1,5. Auch die nach der LiqV für die weiteren Beobachtungszeiträume (Laufzeitbänder bis zu zwölf Monaten) zu berechnenden Beobachtungskennzahlen deuten nicht auf zu erwartende Engpässe hin.

Darüber hinaus ist die Liquiditätsdeckungsanforderung (Liquidity Coverage Ratio – LCR) gemäß den Vorgaben der delegierten Verordnung (EU) 2015/61 einzuhalten. Die Mindestquote von 70 % wurde im Geschäftsjahr nicht unterschritten. Die LCR-Quote der Sparkasse Regensburg lag per 31.12.2016 bei 142 %.

Auf Basis unserer Finanzplanung ist die Zahlungsbereitschaft der Sparkasse auch für die absehbare Zukunft gesichert.

### 2.5 Ertragslage

Die Darstellung der Ertragslage erfolgt auf Basis des bundeseinheitlichen Betriebsvergleichs der Sparkassenorganisation.

Die Erfolgsrechnung des Betriebsvergleichs und die Gewinn- und Verlustrechnung (G+V) ermitteln das gleiche Jahresergebnis, besitzen aber eine unterschiedliche Struktur.

Die Erfolgsrechnung des Betriebsvergleichs stellt eine interne kostenrechnerische, periodenorientierte Sicht des Jahresergebnisses dar. Dabei werden zur Ermittlung des Betriebsergebnisses vor Bewertung die Erträge und Aufwendungen um periodenfremde und außergewöhnliche Posten bereinigt, die in der internen Darstellung dem neutralen Ergebnis zugerechnet werden.

**Entwicklung der Ertragslage**

| | 2016 | 2015 | Veränderung 2016 | Veränderung 2016 |
|---|---|---|---|---|
| | Mio. EUR | Mio. EUR | Mio. EUR | % |
| | | | | |
| Durchschnittsbilanzsumme (DBS) | 4.272,7 | 4.163,4 | 109,3 | 2,63 |
| | | | | |
| Zinsüberschuss | 68,7 | 73,1 | -4,4 | -6,0 |
| Provisionsüberschuss | 26,4 | 26,3 | 0,1 | 0,3 |
| Sonstiger ordentlicher Ertrag | 1,1 | 1,2 | 0,0 | -1,0 |
| Ordentlicher Ertrag | 27,5 | 27,4 | 0,1 | 0,3 |
| Personalaufwand | 42,7 | 43,6 | -0,9 | -2,0 |
| Sachaufwand | 22,0 | 21,7 | 0,3 | 1,2 |
| Sonstiger ordentlicher Aufwand | 0,3 | 0,3 | 0,1 | 20,7 |
| Ordentlicher Aufwand | 65,1 | 65,6 | -0,6 | -0,8 |
| Betriebsergebnis vor Bewertung | 31,2 | 34,9 | -3,8 | -10,8 |
| Bewertungsergebnis (incl. Vorsorge-reserven) | -7,9 | -12,4 | +4,5 | +36,3 |
| Neutrales Ergebnis | -8,8 | 0,3 | -9,1 | -3.127,9 |
| Ergebnis vor Steuern | 14,5 | 22,8 | -8,3 | -36,5 |
| Steuern | 3,8 | 9,6 | -5,9 | -60,8 |
| Jahresergebnis | 10,7 | 13,1 | -2,5 | -18,7 |
| | | | | |
| Cost-Income-Ratio i. v. H. *) | 67,50 | 65,17 | 2,33 | 3,6 |

*) Quotient aus **Dividend** (Personalaufwand + Sachaufwand) und **Divisor** (Zinsüberschuss + Provisionsüberschuss + sonstiger ordentlicher Ertrag – sonstiger ordentlicher Aufwand) : 100

Bei der Gegenüberstellung der Ergebnisse aus den Jahren 2015/2016 ergeben sich unter anderem folgende Erkenntnisse:

Die DBS stieg im Berichtsjahr 2016 an. Damit erfüllte sich die im Vorjahr prognostizierte Entwicklung.

Der Zinsüberschuss ging erwartungsgemäß merklich zurück. Fällige Wertpapiere mit hohen Kupons sowie auslaufende Zinsfestbindungen im Kundenkreditbereich konnten aufgrund der Niedrigzinssituation nur zu deutlich geringeren Zinssätzen wiederangelegt werden. Kompensationsmöglichkeiten auf der Passivseite waren nur begrenzt möglich. Negativzinsen wurden nicht an die Kunden weitergegeben. Negativzinsen belasteten unsere bestehenden Absicherungsmaßnahmen (Payer-Swaps) und somit den Zinsüberschuss.

Der Provisionsüberschuss pendelte sich leicht über Vorjahresniveau ein. Die Provisionserträge im Bauspar- und Immobilienbereich erfüllten die ursprüngliche Einschätzung. Auch die Sparte Versicherungen entwickelte sich – entgegen unserer Erwartung – steigend. In den Bereichen Wertpapiere und Internationales Geschäft konnten die Prognosewerte nicht erreicht werden.

Der Personalaufwand entwickelte sich, entgegen unserer ursprünglichen Annahme, rückläufig. Geringere Tarifabschlüsse sowie personelle Einsparungsmaßnahmen waren Grund für diese Entwicklung.

Die Zunahme beim Sachaufwand erfolgte plangemäß. Belastend wirkten unter anderem höhere Aufwendungen in Zusammenhang mit der europäischen Bankenabgabe. Kompensationen ergaben sich beispielsweise durch Einsparungen beim Gebäudeaufwand.

Das Betriebsergebnis vor Bewertung blieb, wie geplant, deutlich hinter dem Vorjahreswert zurück.

Die Belastung aus dem Bewertungsergebnis fiel – entgegen unserer Erwartung – geringer aus. Als Entlastungsfaktoren wirkten Zuschreibungen auf Wertpapiere, geringere Wertberichtigungen bei den Verbundbeteiligungen sowie Gewinne aus Beteiligungs- und Immobilienveräußerungen. Dem Fonds für allgemeine Bankrisiken gem. § 340g HGB konnten 4,0 Mio. EUR zugeführt werden.

Das Neutrale Ergebnis verringerte sich. Die Positionsschließung eines Zinssicherungsgeschäftes (Swap) war dabei ein wesentlicher Faktor.

Der Jahresüberschuss liegt, wie angenommen, deutlich unter dem Vorjahreswert.

Die gemäß § 26a Absatz 1 Satz 4 KWG offen zu legende Kapitalrendite, berechnet als Quotient aus Jahresüberschuss und Bilanzsumme, beträgt 0,25 % (Vorjahr: 0,32 %).

### 2.6 Zusammenfassende Beurteilung der Geschäftsentwicklung und der Lage der Sparkasse

Die Wettbewerbssituation, in der sich die Sparkasse Regensburg befindet, ist grundsätzlich mit der des Vorjahres vergleichbar. Der Markt in unserem Geschäftsgebiet ist nach wie vor von einer größeren Anzahl konkurrierender Banken hart umkämpft. Das weiter anhaltende Niedrigzinsumfeld belastet nicht nur Sparer und Anleger, sondern führt auch bei der Kreditwirtschaft zu einem Rückgang des Zinsüberschusses. Daneben wird den Sparkassen die Erfüllung ihres öffentlichen Auftrags durch immer neue Regulierungsmaßnahmen zunehmend erschwert.

Entsprechend unserer Erwartung konnten wir bei den Kundenkrediten eine weitere Wachstumsentwicklung verzeichnen, wenn auch mit einer geringeren Dynamik ausgestattet, als noch in den beiden sehr erfolgreichen Jahren zuvor. Der Bereich der Kundenkredite entwickelte sich damit positiver als der Durchschnitt der bayerischen Sparkassen. Die Wachstumsimpulse kamen erneut von der breiten Basis der Privatkunden. Die Sparkassenstruktur im Vertrieb sowie unsere Positionierung im Firmen- und Gewerbekundensegment tragen mittlerweile nachhaltig zum Erfolg der Sparkasse bei.

Auch die Kundeneinlagen entwickelten sich, wie geplant, auf hohem Niveau weiter nach oben – ebenfalls basierend auf dem Kundensegment der Privatkunden. Erfreulich war auch die weiter steigende Zahl an Girokonten.
Insgesamt wertet der Vorstand die Bestandszuwächse bei den Kundenkrediten und -einlagen als anhaltendes Vertrauen der Kunden in die Sparkasse Regensburg.

Die Vermögens- und Finanzlage der Sparkasse Regensburg war im gesamten Geschäftsjahr 2016 geordnet.

Vor dem Hintergrund eines sehr schwierigen Umfeldes ist der Vorstand mit der Ertragslage und der Geschäftsentwicklung 2016 zufrieden. Der rückläufige Zinsüberschuss konnte zum Teil durch Einsparungen beim Personalaufwand sowie durch einen geringeren Aufwand beim Bewertungsergebnis kompensiert werden. Externe Belastungsfaktoren wie die Zinsentwicklung oder die Erhöhung der europäischen Bankenabgabe waren nicht beeinflussbar.

Mit dem erzielten Jahresergebnis konnte eine angemessene Zuführung zu den Eigenmitteln erreicht werden.

Die wirtschaftliche Lage der Sparkasse wird vom Vorstand als solide beurteilt.

## 3. Risikobericht

### 3.1 Risikomanagement

Die bewusste Übernahme, aktive Steuerung und gezielte Transformation von Risiken und Berücksichtigung eines risiko- und ertragsadäquaten Einsatzes des Eigenkapitals stellen Kernfunktionen von Kreditinstituten dar. Im strategischen Rahmenwerk hat die Sparkasse eine Geschäftsstrategie festgelegt, die auch eine Risikostrategie beinhaltet. In der Geschäftsstrategie werden die Ziele der Sparkasse für jede wesentliche Geschäftsaktivität sowie die Maßnahmen zur Erreichung dieser Ziele dargestellt. Die Risikostrategie formuliert Grundsätze der Sparkasse zum Umgang mit Risiken und setzt so die Rahmenbedingungen für den Aufbau eines konsistenten Risikomanagement- und controllingsystems, das in einem Risikohandbuch dokumentiert ist. Die Risikostrategie ist dadurch gekennzeichnet, dass sie auf Basis der Risikotragfähigkeit die in der Geschäftsstrategie niedergelegten Ziele und Planungen berücksichtigt. Mit Hilfe von Risikolimiten und Risikotoleranzen wurde bestimmt, in welchem Umfang und zu welchen Bedingungen die Sparkasse bereit ist, Risiken einzugehen.

In enger Anlehnung an die BaFin-Verlautbarung „Mindestanforderungen an das Risikomanagement“ (MaRisk) werden folgende Risikoarten als wesentlich definiert: Adressenrisiko, Marktpreisrisiko, Liquiditätsrisiko und operationelles Risiko.

Ausgehend von der jährlich einmal erstellten Risikoinventur, deren Dokumentation sich im Risikohandbuch der Sparkasse niederschlägt, wird geprüft, ob sonstige Risiken wesentlich im Sinne der MaRisk geworden sind und ob sich die wesentlichen Risikoarten in ihrer Bedeutung verändert haben.
Das Risikomanagement (im Sinne der MaRisk) umfasst alle Maßnahmen, Verfahren und Prozesse, welche die jederzeitige Steuerung und Überwachung eines Kreditinstitutes sicherstellen. Die Risikomanagementziele bestehen somit darin, Risiken des Sparkassenbetriebes transparent und dadurch steuerbar zu machen. Dies erfolgt unter Beachtung gesetzlicher und aufsichtsrechtlicher Anforderungen. Die Risiken werden dabei auf ein Maß beschränkt, das die Vermögens-, Finanz- und Ertragssituation der Sparkasse nicht gefährdet.
Die Risikomanagementverfahren und –systeme sind so ausgerichtet, dass sie für das Profil und die Strategie der Sparkasse Regensburg angemessen sind und den gesetzlichen Anforderungen entsprechen. Die angewandten Methoden z.B. zur Messung, Steuerung und Aggregation aller Risikoarten werden dabei kontinuierlich weiterentwickelt.

Für alle Teilschritte des Risikomanagements sind Verantwortlichkeiten festgelegt worden. Der Verwaltungsrat bestimmt die Richtlinien für die Geschäfte der Sparkasse, erlässt eine Geschäftsanweisung für den Vorstand und überwacht dessen Tätigkeit. Der Gesamtvorstand legt neben der geschäftspolitischen Zielsetzung die wesentliche strategische und methodische Ausrichtung fest und bestimmt die Höhe des zur Risikoabdeckung zur Verfügung stehenden Risikodeckungspotenzials sowie dessen Verteilung auf die einzelnen Risikoarten. Der Vorstand informiert den Verwaltungsrat über die Strategie, das Überwachungssystem sowie mittels der Limitauslastung und den Limitveränderungen über die Risikosituation der Sparkasse. Dabei wird im Rahmen des Risikoberichts auf alle wesentlichen Risiken einzeln eingegangen.

Über die eingegangenen Risiken wird dem Gesamtvorstand der Sparkasse regelmäßig schriftlich berichtet. Der Verwaltungsrat erhält in jeder regulären Sitzung einen Bericht über die Gesamtrisikolage und die Risikotragfähigkeit sowie je nach Aktualität über weitere risikorelevante Vorkommnisse innerhalb des Risikomanagement und –controllingsystems anhand des Risikoberichts. Eine Ad-hoc-Berichterstattung ist bei Risikoereignissen von wesentlicher Bedeutung vorgesehen.

Die von den MaRisk geforderte aufbauorganisatorische Trennung zwischen Steuerung und Überwachung ist in allen Risikobereichen vorhanden.
Das Risikocontrolling, das aufbauorganisatorisch von Bereichen, die Geschäfte initiieren oder abschließen, getrennt ist, hat die Funktion, die Adressenausfall-, Marktpreis-, Liquiditätsrisiken und operationellen Risiken zu identifizieren, zu beurteilen, zu überwachen und darüber zu berichten. Dem Risikocontrolling obliegt die Überprüfung der Angemessenheit der eingesetzten Methoden und Verfahren sowie die Errichtung und Weiterentwicklung der Risikosteuerungs- und –controllingprozesse. Zusätzlich verantwortet das Risikocontrolling die Umsetzung der aufsichtsrechtlichen und gesetzlichen Anforderungen, die Erstellung der Risikotragfähigkeitsberechnungen und die laufende Überwachung der Einhaltung von Risikolimiten. Es unterstützt den Vorstand in allen risikopolitischen Fragen und ist an der Erstellung und Umsetzung der Risikostrategie beteiligt. Diese für die Überwachung und Steuerung von Risiken zuständige Risikocontrolling-Funktion wird durch die Mitarbeiter der Abteilung Controlling wahrgenommen. Die Leitung der Risikocontrolling-Funktion

obliegt dem Leiter der Abteilung Gesamtbanksteuerung. Unterstellt ist er dem Vorstandsvorsitzenden.

Die Risikoberichterstattung verfolgt als Zielsetzung die Aufbereitung, Verdichtung und Kanalisierung der Daten aus der Risikomessung in Form eines systematischen internen Risikoreportings. Das Reporting der Handelsgeschäfte an die Geschäftsleitung erfolgt täglich (Ergebnisse und Limitauslastungen des vorangegangenen Handelstages) sowie monatlich in Form eines etwas ausführlicheren Berichtes, der u. a. auch Risikosimulationen beinhaltet. Über die Kredit-, Marktpreis- und Liquiditätsrisiken wird grundsätzlich vierteljährlich, über operationelle Risiken halbjährlich an die Geschäftsleitung berichtet. Zusätzliche (z.B. monatliche) Beobachtungen und Informationen sind je nach Risikorelevanz möglich und nötig.

Die Überwachung des Gesamtbankrisikos erfolgt insbesondere durch die Risikotragfähigkeitsanalyse. Auf Basis einer strategischen Risikoneigungsdefinition werden für die operative Steuerung Limite festgelegt. Die Allokation des Gesamtbankrisikos (Asset Allokation) erfolgt mittels einer Analyse verschiedener Risikoarten und deren Diversifikationswirkung auf Gesamtbankebene.

Im Rahmen der Gesamtbankrisikosteuerung werden neben der Messung und Steuerung von Risiken in den einzelnen Bereichen in regelmäßigen Abständen Risikotragfähigkeitsanalysen und Stresstests durchgeführt.

Die Risikotragfähigkeitsanalyse stellt ein zentrales Instrument des Management- und Controllingsystems dar. Darin wird die Fähigkeit der Sparkasse beurteilt, die Risiken des Bankgeschäfts durch die vorhandenen finanziellen Mittel zu decken. Im Rahmen der im vierteljährlichen Turnus durchgeführten Risikotragfähigkeitsberechnung stellt die Sparkasse ihr Risikodeckungspotential den eingegangenen Risiken gegenüber. Dabei wird ein Risikodeckungspotenzial (Ertragskraft, Reserven, Eigenkapital) verwendet, welches den Ansprüchen eines „going-concern-Ansatzes“ genügt. Vom vorhandenen periodenorientierten Risikodeckungspotenzial haben wir 90 Mio. € zur Unterlegung unserer Risikolimite eingesetzt. Die größten Anteile betreffen das Risiko aus dem Bewertungsergebnis Wertpapiere mit 38 % und das Zinsänderungsrisiko mit 22 % des Gesamtbanklimits. Zum Stichtag 31.12.2016 ist das Gesamtbanklimit mit 64 % ausgelastet. Während des Geschäftsjahres 2016 wurde das Gesamtbanklimit stets eingehalten.

Um der gleichrangigen Bedeutung von periodenorientierter, regulatorischer und barwertiger Steuerung gerecht zu werden, wird die Betrachtung der Risiken auf Gesamtbankebene in allen drei Sichtweisen durchgeführt. Auf Basis von statistischen Risikomaßen werden die Einzelrisiken in der wertorientierten Sichtweise quantifiziert und unter Einbezug von Diversifikationseffekten zu einem wertorientiertem Gesamtrisiko aggregiert. Hierzu wird ein Konfidenzniveau von 99 %, bei einer Haltedauer von einem Jahr bzw. von 3 Monaten für die Risiken aus dem Spezialfonds unterstellt.

Ergänzt wird die Risikotragfähigkeitsanalyse um Stresstests, die Art, Umfang, Komplexität und den Risikogehalt von Geschäftsaktivitäten widerspiegeln. Die bestehende Stresstestkonzeption berücksichtigt sowohl historische Analysen von Risikofaktoren als auch hypothetische Annahmen. Bei der Definition der Ereignisse werden die Auswirkungen auf globale Risikofaktoren (z. B. Zinsentwicklung)

gleichermaßen berücksichtigt, wie regional- oder institutsspezifische Risikofaktoren (z.B. Kreditportfoliostruktur) sowie die strategische Ausrichtung der Sparkasse (z.B. wesentliche Assetklassen). Die Auswirkungen der Stresstests werden in beiden Sichtweisen (perioden- und wertorientiert) dargestellt, sowie die Auswirkungen auf die Risikotragfähigkeit untersucht. Die Berichterstattung erfolgte im Rahmen eines eigenen Berichts an den Vorstand sowie in zusammengefasster Form an den Verwaltungsrat.
Im Rahmen der jährlichen Risikoinventur werden auch Risiko- und Ertragskonzentrationen berücksichtigt. Insbesondere als Universalbank sieht hier das Geschäftsmodell der Sparkasse eine breite Fächerung der Geschäftsbeziehungen und damit der Erträge vor.

Zur Steuerung werden grundsätzlich die Systeme der Sparkassenorganisation, teilweise auch externe oder selbst erstellte Module, eingesetzt. Die dem Risikomanagement zu Grunde liegenden Prozesse werden z.B. im Risikohandbuch bzw. in Arbeitsanweisungen (inkl. Kontrollsystem) dargestellt. Die Funktionsfähigkeit und Angemessenheit aller Risikomanagementaktivitäten wird gemäß den MaRisk durch die Interne Revision geprüft. Die Prüfungsrichtlinien für die Interne Revision sind im Risikohandbuch dokumentiert.

## 3.2 Risikoarten und deren Absicherung

### 3.2.1 Adressenausfallrisiken

Das Adressenausfallrisiko beinhaltet im Allgemeinen die Gefahr, dass aufgrund von Bonitätsverschlechterungen und/oder des Ausfalls einer Person oder einer Unternehmung, zu der eine wirtschaftliche Beziehung besteht, Verluste entstehen. Das Ausfallrisiko betrifft sowohl bilanzwirksame Forderungen in Form von Kundenkrediten, Beteiligungen und Wertpapieren, als auch nicht bilanzwirksame Zahlungsansprüche aus derivativen Finanzinstrumenten.

In der Risikostrategie sind die Grundsätze zur Steuerung (Kundenkreditgeschäft, Eigengeschäfte und Beteiligungen, Einzelkreditvergabe sowie Portfoliosteuerung) des Adressenrisikos festgelegt. Im Kundenkreditgeschäft räumt der Vorstand der Risikobegrenzung den absoluten Vorrang ein. Bei der Vergabe von Krediten an Kunden werden die Risiken begrenzt durch die Beachtung von Grundsätzen bei der Einzelkreditvergabe, durch die risikogerechte Gestaltung der Prozesse und Arbeitsabläufe sowie durch die aufbauorganisatorische Behandlung des Kreditgeschäftes. Aufsichtsrechtliche Vorgaben sind dabei zu jeder Zeit einzuhalten. Auf Portfolioebene steht die Vermeidung von Klumpen- bzw. Konzentrationsrisiken im Vordergrund. Die Einhaltung der strategischen Ziele gem. Risikostrategie wird regelmäßig überprüft.

Das bestehende Adressenausfallrisiko wird in Form von zwei Büchern (Kundengeschäft und Eigenanlagen/Beteiligungen), zwei Betrachtungsweisen (periodisch und wertorientiert) und zwei Aggregationsebenen (Einzelgeschäftsebene und Gesamtportfolioebene) monatlich überwacht und im Rahmen der vierteljährlichen Berichterstattung dargestellt.

Die folgenden Darstellungen enthalten den Gesamtbetrag der Forderungen zum Offenlegungsstichtag, aufgeschlüsselt nach den verschiedenen Forderungsarten und verteilt auf Hauptbranchen. Die bilanziellen und außerbilanziellen Geschäfte werden jeweils mit ihren Werten nach Abzug der Risikovorsorge ausgewiesen. Die Ermittlung der Zahlen wird gemäß den Vorgaben der CRR (gegliedert nach Forderungsarten) vorgenommen.

| **Hauptbranchen**<br><br>**in Mio. EUR** | **Derivate** | **Wertpapiere** | **Kredite, Zusagen und andere nicht-derivative außerbilanzielle Aktiva** |
|---|---|---|---|
| Banken | 7 | 511 | 289 |
| Privatpersonen | 0 | 0 | 1.803 |
| Unternehmen und wirtschaftlich selbstständige Personen | 0 | 0 | 1.727 |
| Organisation ohne Erwerbszweck | 0 | 0 | 38 |
| Öffentliche Haushalte | 0 | 176 | 206 |
| Offene Investmentvermögen (inklusive Geldmarktfonds) | 0 | 293 | 0 |
| Sonstige | 0 | 0 | 66 |
| **Gesamt*** | **7** | **980** | **4.128** |

* Ermittlung der Zahlen nach gewichteten Risikopositionen gem. CRR-Vorgaben. Ein Vergleich mit den Forderungsbeständen aus dem Kundenkreditportfolio und Handelsgeschäften in den folgenden gem. MaRisk-Adressenrisikoberichtswesen ermittelten Sichten ist daher nicht möglich.

Das Kundenkreditportfolio lässt sich per 31.12.2016 wie folgt nach Kundengruppen gliedern:

| **Kundengruppe** | **Obligo** | | **Blanko** | |
|---|---|---|---|---|
| | **in Mio. €** | **Anteil an Gesamt** | **in Mio. €** | **Anteil an Gesamt** |
| Privatkunden | 1.841 | 48% | 685 | 50% |
| Unternehmen | 1.790 | 47% | 690 | 50% |
| Kommunen | 206 | 5% | 0 | 0% |
| **Gesamt*** | **3.837** | **100%** | **1.375** | **100%** |

Die Differenz zum im Punkt 2.2.1 ausgewiesenen Kundenkreditvolumen ist im Wesentlichen auf die in dieser Summe enthaltenen widerruflichen Kontokorrentlinien und Kreditkartenlimite zurückzuführen. Darüber hinaus finden in dieser Summe Einzel- und Pauschalwertberichtigungen sowie Vorsorgereserven gem. § 340f HGB keine Berücksichtigung.

Wie der Aufstellung entnommen werden kann, ist der Anteil der Kredite an Unternehmen in etwa genau so hoch wie der Anteil der Kredite an Privatpersonen. Die Kundenstruktur wird von der Sparkasse als günstig eingestuft.

Bezogen auf die Branchenstruktur stellt sich das Kundenkreditportfolio per 31.12.2016 wie folgt dar:

| Kundengruppe | Obligo | | Blanko | |
|---|---|---|---|---|
| | in Mio. € | Anteil an Gesamt | in Mio. € | Anteil an Gesamt |
| Privatkunden | 1.841 | 48% | 685 | 50% |
| Grundstücks- und Wohnungswesen | 454 | 12% | 126 | 9% |
| Öffentliche Haushalte | 206 | 5% | 0 | 0% |
| Baugewerbe (inkl. Bauträger) | 228 | 6% | 136 | 10% |
| Energie und Wasserversorgung | 152 | 4% | 66 | 5% |
| Beratung, Planung, Sicherheit | 114 | 3% | 47 | 3% |
| Verarbeitendes Gewerbe | 131 | 3% | 66 | 5% |
| Gesundheit, Soziales | 121 | 3% | 30 | 2% |
| Sonstige* | 590 | 15% | 219 | 16% |
| **Gesamt** | **3.837** | **100%** | **1.375** | **100%** |

* Insgesamt 11 weitere Branchen (Hauptwirtschaftszweige) mit einem Obligo zwischen 4 und 104 Mio. €

Neben dem Privatkundensektor nimmt die Branche „Grundstücks- und Wohnungswesen" den größten Anteil am gesamten Obligovolumen ein. Hinsichtlich der Branchenstruktur ist das Kreditportfolio derzeit nicht optimal diversifiziert.

Die Größenklassenstruktur im Kundenkreditportfolio per 31.12.2016 stellt sich wie folgt dar:

| Größenklassen (nach Obligo) | Obligo | | Blanko | |
|---|---|---|---|---|
| | in Mio. € | Anteil an Gesamt | in Mio. € | Anteil an Gesamt |
| < 1,0 Mio. € | 2.207 | 58% | 811 | 59% |
| 1,0 < 3,0 Mio. € | 290 | 8% | 94 | 7% |
| 3,0 < 5,0 Mio. € | 156 | 4% | 64 | 5% |
| 5,0 < 7,5 Mio. € | 107 | 3% | 37 | 3% |
| 7,5 < 10,0 Mio. € | 144 | 4% | 52 | 4% |
| > 10,0 Mio. € | 933 | 24% | 317 | 23% |
| **Gesamt** | **3.837** | **100%** | **1.375** | **100%** |

Im Hinblick auf die Größenklassenstruktur ist das Kundenkreditportfolio nicht optimal diversifiziert. Die Größenklassen > 5 Mio. EUR Obligo stellen mit einem Anteil von rund einem Drittel am gesamten Obligovolumen ein Klumpenrisiko dar.

Zur Bewertung des Adressenausfallrisikos auf Einzelkreditebene erfolgen eine individuelle Bonitätsbeurteilung sowie nachfolgend eine laufende Bonitätsüberwachung. Hierzu werden verschiedene Merkmale, wie z. B. Nachhaltigkeit der Kapitaldienstfähigkeit, Vermögensstatus, sowie andere quantitative und qualitative Eigenschaften des Kreditnehmers analysiert, gewichtet und in einem Ratingsystem zusammengefasst. Dem einzelnen Kreditengagement werden in diesem Zusammenhang individuelle Ausfallwahrscheinlichkeiten zugeordnet. Die Kreditrisiken werden durch die Hereinnahme von Sicherheiten zusätzlich begrenzt. Die detaillierte Kreditrisikoeinstufung des gesamten Kreditengagements eines Kreditnehmers bildet neben weiteren Analyseverfahren die Grundlage für die Kreditentscheidung und die Festlegung einer risikoadjustierten Bepreisung. Für die Risikoklassifizierung setzen wir die von der Sparkassen-Finanzgruppe entwickelten Rating- und Scoringverfahren ein.

Bezogen auf die Bonitätsstruktur und den damit verbundenen Ausfallwahrscheinlichkeiten stellt sich das Kreditportfolio per 31.12.2016 wie folgt dar:

| **Risikogruppe** | **1** | **2** | **3** | **4** | **5** | **6** | **ohne Verfahren** |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| Ratingklasse | 1 - 4 | 5 - 10 | 11 - 13 | 14 - 15 | 16 - 17 | 18 | ohne |
| Risikoklasse (PrüfBV) | Ia | Ib | IIa | IIb | IIIa | IIIb | ohne |
| Externes Rating* | AAA bis BBB | BBB- bis B+ | B | B- | CCC+ bis C | D | ohne |
| **Strukturanteil in %** | **67,5%** | **28,0%** | **2,5%** | **1,3%** | **0,2%** | **0,2%** | **0,3%** |

*Ratingkategorien gem. S&P

Die Bonitätsstruktur des Kundenkreditportfolios wird von der Sparkasse als günstig eingestuft.

Neben der monatlichen Ermittlung der Adressenrisikoposition wird eine regelmäßige Analyse, Bewertung und Steuerung des Kreditportfolios mit Hilfe des Modells "Credit Portfolio View" durchgeführt. Das Modell liefert u. a. die beiden Risikomaße „erwarteter Verlust“ sowie den sogenannten „Credit-Value at Risk“(CreditVaR). Der CreditVaR bezeichnet hier die maximal ungünstigste Abweichung vom erwarteten Verlust, die bei einer unterstellten Haltedauer von einem Jahr mit einer Wahrscheinlichkeit von 99 % nicht überschritten wird. Hierbei werden neben Kreditportfoliodaten auch übergreifende Parameter wie Migrationsmatrix, Ausfallzeitreihen sowie Einbringungs- und Verwertungsquoten berücksichtigt. Der CreditVaR ist ein statistisches Risikomaß, das Konzentrationsrisiken in besonderer Weise berücksichtigt. Sowohl der erwartete Verlust als auch der CreditVaR werden von der Sparkasse limitiert.
Per 31.12.2016 betrug der erwartete Verlust im Kundenkreditportfolio 5,0 Mio. EUR (Limit 11 Mio. EUR) und der CreditVaR 16,8 Mio. EUR (Limit 25 Mio. EUR). Beide Risikomaße befinden sich innerhalb der festgesetzten Limite.
Um Adressenausfallrisiken bei Kreditengagements frühzeitig zu erkennen, zu bewerten und im Jahresabschluss durch Risikovorsorge (Einzelwertberichtigungen, Rückstellungen) abzuschirmen, verfügt die Sparkasse über entsprechende Steuerungsinstrumente. Die Kreditengagements werden regelmäßig dahingehend überprüft ob Risikovorsorgebedarf besteht, die Berechnungsweisen sowie die Prozesse zur Genehmigung der Risikovorsorgen sind in den Arbeitsanweisungen geregelt. Für alle erkannten und latenten Kreditrisiken wurde Vorsorge getroffen.

Zum Bilanzstichtag 31.12.2016 stellt sich die Risikovorsorge der Sparkasse Regensburg wie folgt dar:

| | **Anfangs-bestand** | **Neubildung** | **Auflösung** | **Verbrauch** | **End-bestand** |
|---|---|---|---|---|---|
| | **T€** | **T€** | **T€** | **T€** | **T€** |
| EWB | 5.811 | 3.381 | 2.812 | 1.122 | 5.258 |
| Rückstellungen | 407 | 1.232 | 375 | 0 | 1.264 |
| PWB | 716 | 0 | 24 | 0 | 692 |
| **Summe** | **6.934** | **4.613** | **3.211** | **1.122** | **7.214** |

Der Bestand an Einzelwertberichtigungen hat sich im Vergleich zum Vorjahr reduziert. Durch die Neubildung von Rückstellungen hat sich die Risikovorsorge der Sparkasse Regensburg insgesamt gesehen im Vergleich zum Vorjahr erhöht.
Die Risikolage der Sparkasse im Kundenkreditgeschäft ist, gemessen an den verfügbaren Reserven, der Ertragskraft und der relativen Risikokosten, als nicht überhöht zu beurteilen. Die im Rahmen der

Risikotragfähigkeitsanalyse festgestellten Adressenrisiken werden durch das entsprechende Risikodeckungspotenzial abgedeckt.

Analog dem Kundenkreditgeschäft werden die Adressenausfallrisiken aus Handelsgeschäften durch die sorgfältige Auswahl unserer Vertragspartner nach den Regeln der Kreditwürdigkeitsprüfung begrenzt. Es sind Limite je Geschäftspartner, Emittent- und Kontrahent festgelegt. Eigenanlagen werden nur im Bereich Investment Grade (BBB- oder besser) getätigt. Ausnahmen bilden die im Rahmen der „Asset Allocation" getätigten Investitionen in den Spezialfonds. Investitionen werden dabei in granularer Form zum Teil mittels Publikumsfonds vorgenommen.

Per 31.12.2016 stellt sich die Bonitätsstruktur der Handelsgeschäfte wie folgt dar:

| **Ratingklasse*** | **Marktwert in Mio. €** | **Anteil an Gesamt** |
|---|---|---|
| AAA | 562 | 53% |
| AA | 123 | 11% |
| A | 129 | 12% |
| BBB+ | 81 | 8% |
| BBB | 100 | 9% |
| BBB- | 14 | 1% |
| BB+ | 21 | 2% |
| BB | 0 | 0% |
| BB- | 0 | 0% |
| B+ | 40 | 4% |
| B | 0 | 0% |
| B- | 0 | 0% |
| **Gesamt** | **1.070** | **100%** |

*Ratingklassen gem. S&P

Auf Portfolioebene werden die Adressenrisiken aus Handelsgeschäften analog dem Kundenkreditgeschäft mit Hilfe der Risikomaße „Erwarteter Verlust" und „CreditVaR" (Haltedauer 1 Jahr, Konfidenzniveau 99 %) limitiert.

Per 31.12.2016 betrug der erwartete Verlust im Eigenanlagen-Portfolio 0,8 Mio. EUR (Limit 1,5 Mio. EUR) und der CreditVaR 9,0 Mio. EUR (Limit 9 Mio. EUR). Beide Risikomaße befinden sich innerhalb der festgesetzten Limite.

Das Adressenausfallrisiko aus den Eigenanlagen wird u. a. aufgrund der Bonitätsstruktur von der Sparkasse als nicht erhöht eingestuft. Darüber hinaus ist das Portfolio der Eigenanlagen insbesondere im Hinblick auf Größenklassen gut diversifiziert. Die im Rahmen der Risikotragfähigkeitsanalyse festgestellten Adressenrisiken aus Handelsgeschäften werden durch das entsprechende Risikodeckungspotenzial abgedeckt.

Unter Beteiligungsrisiko wird das Risiko eines möglichen Bewertungsverlusts, des finanziellen Verlusts aufgrund von Wertminderungen des Beteiligungsportfolios, aufgrund von nachteiligen Veränderungen der Unternehmenswerte, der im Beteiligungsportfolio der Sparkasse enthaltenen Beteiligungen, verstanden.

Bei den Beteiligungen der Sparkasse handelt es sich um strategische Beteiligungen bzw. um Beteiligungen zur Stärkung des Sparkassenfinanzverbundes. Teilweise werden die Beteiligungen auch indirekt über den SVB bzw. DSGV gehalten. Die Sparkasse ist Mitglied am Sparkassenverband Bayern. Als Mitglied ist sie verpflichtet, über Umlagen den nicht anderweitig gedeckten Verbandsaufwand entsprechend dem maßgeblichen Umlageschlüssel abzudecken. Dies gilt auch für den Fall, dass die erwarteten Erträge die aus den im Rahmen dieser Konstruktionen möglicherweise entstehenden Aufwendungen nicht abdecken.

Die Beteiligungsrisiken werden in das Risikotragfähigkeitskonzept der Sparkasse einbezogen. Das Beteiligungscontrolling erfolgt durch die Abteilung Vorstandsstab. Für die Verbundbeteiligungen werden die vom SVB bereitgestellten Unterlagen verwendet. Das Beteiligungsrisiko wird durch einen prozentualen Risikoabschlag bezogen auf den Buchwert ermittelt. Zum Bilanzstichtag (31.12.2016) beträgt das Beteiligungsrisiko 12,4 Mio. EUR und ist durch entsprechendes Risikodeckungspotenzial abgedeckt.

### 3.2.2 Marktpreisrisiken

Unter dem Marktpreisrisiko wird die Gefahr verstanden, dass sich Marktpreise von Finanztiteln oder Sachgütern aufgrund von Änderungen der Marktlage zu Ungunsten des Inhabers entwickeln. Das Marktpreisrisiko umfasst Zinsänderungsrisiken aus Kunden- und Interbankengeschäften, Währungs-, Aktienkurs- und Rohwarenrisiken (inklusive spezieller Optionspreisrisiken) sowie das Sachwert- und Immobilienrisiko.

In der Risikostrategie der Sparkasse sind die Grundsätze zur Steuerung des Marktpreisrisikos (insbesondere des Zinsänderungsrisikos) festgelegt.

Zur Begrenzung von Marktpreisrisiken aus Handelsgeschäften wird eine tägliche Bewertung zu Marktpreisen (Mark-to-Market) durchgeführt. Die erzielten Handelsergebnisse werden auf ein GuV-orientiertes Verlustlimit angerechnet, das aus der periodenorientierten Risikotragfähigkeit abgeleitet ist.

Potenzielle Verlustrisiken werden mittels Value at Risk-Konzept ermittelt. Dabei verwenden wir das Verfahren der Modernen Historischen Simulation, der historische Betrachtungszeitraum beträgt 500 Tage, das Konfidenzniveau 99 % bei einer unterstellten Haltedauer von 10 Tagen. Zusätzlich werden monatlich potenzielle Zinsänderungs- sowie Spreadrisiken bezogen auf die Handelsgeschäfte mit Hilfe von Szenarioanalysen simuliert. Die angewandten Risikoparameter werden mindestens jährlich einem Backtesting unterzogen, um deren Vorhersagekraft einschätzen zu können.

Zur Überwachung des Marktpreisrisikos durch das Risikocontrolling wird das Programm SimCorp Dimension eingesetzt. Bei Überschreiten von Limiten bzw. vordefinierten Frühwarngrenzen tritt ein entsprechendes Eskalationsverfahren in Kraft.

Der Bestand der bilanzwirksamen Handelsgeschäfte hat sich gegenüber dem Vorjahr nur unwesentlich geändert. Die Marktpreisrisiken aus Handelsgeschäften bewegten sich in 2016 jederzeit innerhalb des Rahmens des vom Vorstand vorgegebenen Limitsystems. Zum Jahresende 2016 war das periodenorientierte Verlustlimit (5 Mio. EUR) mit 0 Mio. EUR und das wertorientierte VaR-Limit (15 Mio. EUR) mit 4,8 Mio. EUR ausgelastet, so dass die Sparkasse die Risikosituation als günstig einstuft.

Das gesamtbankbezogene Zinsänderungsrisiko wird von der Sparkasse mit Hilfe von perioden- und wertorientierten Systemen laufend quantifiziert und mindestens vierteljährlich an den Gesamtvorstand berichtet. Dabei stehen die beiden Sichtweisen (periodenorientiert und wertorientiert) gleichrangig nebeneinander. Beide Steuerungsansätze werden eingesetzt, um Erträge zu optimieren und Risiken aus der Fristentransformation zu begrenzen.

In der wertorientierten Steuerung verfolgt die Sparkasse einen passiven Managementstil. Dieser Managementstil zeichnet sich dadurch aus, dass der Zahlungsstrom einer Benchmark nachgebildet wird und Vermögensstrukturen in ihrer Zusammensetzung langfristig erhalten bleiben. Die Quantifizierung und Steuerung des wertorientierten Zinsänderungsrisikos erfolgt mit Hilfe des Programms „sDIS OSPlus“ anhand des Risikomaßes Value at Risk (VaR). Der VaR ist als negative Abweichung des Barwerts am Planungshorizont vom erwarteten Barwert definiert. Dabei wird ein Konfidenzniveau von 95 % und einer Haltedauer von 3 Monaten zugrunde gelegt. Die Berechnung des Value at Risk beruht auf einer historischen Simulation von Markzinsänderungen (Datenhistorie von 1988 bis 2015). Limitiert wird der Value at Risk bezogen auf den Barwert des Zinsbuchs. Zum Bilanzstichtag 31.12.2016 betrug der absolute VaR 34 Mio. EUR. Der relative VaR bezogen auf den Barwert des Zinsbuchs betrug 5,6 %. Der BaFin-Zinsrisikokoeffizient betrug 23,5 % zum Bilanzstichtag 31.12.2016.

Im Rahmen der periodischen Ermittlung des gesamtbankbezogenen Zinsspannenrisikos setzt die Sparkasse regelmäßig das Programm „GuV-Planer“ ein. Dabei werden potenzielle Zinsänderungen und deren Auswirkung auf die Entwicklung der Zinsspanne mit Hilfe von Szenarioanalysen simuliert. In der periodenorientierten Sichtweise dient die Zinsbuchsteuerung in erster Linie der Stärkung der Zinsspanne.
Die Steuerung des Zinsänderungsrisikos erfolgt auf Gesamtbankebene schwerpunktmäßig mit Hilfe von derivativen Finanzinstrumenten (Darstellung siehe Anhang zum Jahresabschluss).

Das Rohwaren-, Sachwert- und Immobilienrisiko wird vierteljährlich überwacht. Das Sachwert- und Immobilienrisiko aus eigenen Immobilien wird einmal jährlich unter anderem in Form eines Liegenschaftsberichtes untersucht.

Die Marktpreisrisiken bewegten sich in 2016 innerhalb des Rahmens der geschäftspolitischen Zielsetzungen. Die aktuelle Risikopositionierung steht insgesamt im Einklang mit der Risikostrategie und ist unter Berücksichtigung der Ertragslage als nicht überhöht einzuschätzen. Bei der Bilanzierung wurde die Prämisse des Vorsichtsprinzips eingehalten. Wie oben beschrieben erfolgt zum Zwecke der passiven Zinsbuchsteuerung eine Ausrichtung des Zinsbuches an einer festgelegten Benchmark. Auf Basis dieser Benchmark wurden enge Abweichungslimite definiert. Die Sparkasse hat bei Über- oder Unterschreitungen dieser Limite jeweils reagiert, um sich wieder der Benchmark anzunä-

hern. Im Rahmen der Risikotragfähigkeitsbetrachtung wird das Zinsänderungsrisiko der Sparkasse durch ein entsprechendes Risikodeckungspotenzial abgedeckt.

### 3.2.3 Liquiditätsrisiken

Unter Liquiditätsrisiko wird das Risiko verstanden, dass die Sparkasse Zahlungsverpflichtungen zum Zeitpunkt der Fälligkeit nicht mehr uneingeschränkt nachkommen kann (Liquiditätsrisiko im engeren Sinne), zusätzliche Refinanzierungsmittel nur zu erhöhten Marktzinsen beschafft werden können (Refinanzierungsrisiko) oder vorhandene Vermögenswerte nur mit Preisabschlägen verwertet werden können (Marktliquiditätsrisiko).

Das Liquiditätsrisiko wird von der Sparkasse durch entsprechende Plan- und Risikosimulationen (Zahlungsfähigkeitsanalysen) sowie formell über die Survival Period, die LCR-Kennziffer und die Auslastung der Liquiditätskennzahl und der Beobachtungskennzahlen der Liquiditätsverordnung überwacht (vgl. Ausführungen 2.4 Finanzlage).

Das Liquiditätsrisiko steuern wir durch eine stets angemessene Liquiditätsvorsorge, eine tägliche Disposition und eine verantwortungsvolle Strukturierung der Aktiva und Passiva. Die Liquiditätsbeschaffung erfolgt überwiegend über Kundeneinlagen. Zur Feinsteuerung erfolgten Tages- und Termingeldaufnahmen und –anlagen.

Zur Messung und Limitierung der Liquiditätsrisiken orientiert sich die Sparkasse an den Anforderungen des § 11 KWG in Verbindung mit der Liquiditätsverordnung und den MaRisk.

Seit 01.01.2016 ist die Liquiditätsdeckungsquote (LCR) mit 70 % zu erfüllen. Per 31.12.2016 lag die LCR bei 142 %.

Neben der Einhaltung der Vorgaben der Liquiditätsverordnung zu § 11 KWG wird das Liquiditätsrisiko auch mittels eines cashflow-orientierten Ansatzes ermittelt, dargestellt und berichtet. Es werden hierbei drei verschiedene Szenarien simuliert, die unterschiedlich hohe Intensitäten an Liquiditätsabflüsse unterstellen. Als Ergebnis erhält man jeweils eine Survival Period (Überlebenszeitraum) der Sparkasse. Für die Sparkasse wurde dabei eine Risikorelevanz von 12 Monaten definiert. Per 31.12.2016 lag die Survival Period im Risikoszenario bei 27 Monaten.

Die Sparkasse hat ein Frühwarnsystem installiert, welches einen Liquiditätsengpass frühzeitig erkennen kann und Gegensteuerungsmaßnahmen einleitet. Handlungsalternativen für einen sich abzeichnenden Liquiditätsengpass wurden definiert und ein Notfallplan für einen tatsächlichen Liquiditätsengpass erstellt. Schwellenwerte mit Ampelsystem wurden als Auslöser für Handlungsoptionen zur Liquiditätssicherung definiert. Das Frühwarnsystem war ganzjährig in der grünen Ampelphase und wird monatlich überwacht. Die durchgeführten Risiko-Simulationen zeigten kein erhöhtes Liquiditätsrisiko.

### 3.2.4 Operationelle Risiken

Operationelle Risiken werden als die Gefahr von Schäden definiert, die infolge der Unangemessenheit oder des Versagens von internen Verfahren, Mitarbeitern, der internen Infrastruktur oder wegen externer Einflüsse eintreten.
Zentrale Elemente der Steuerung sind die Sammlung aller Schäden aus Operationellen Risiken in einer Schadensfalldatenbank und die Betrachtung und Bewertung von Schadenspotenzialen auf Gesamtbankebene in Form einer Risikolandkarte. Weiterhin wird ein Vergleich mit einer Benchmark durchgeführt, die aus einem deutschlandweiten Sparkassen-Datenpool gebildet wird. Außerdem wird eine Quantifizierung der operationellen Risiken mittels eines statistischen Verfahrens durchgeführt und ein Value at Risk für Operationelle Risiken (OpVaR) ermittelt.

Das Management der Operationellen Risiken obliegt aufgrund der besonderen Beschaffenheit des Risikos allen personalverantwortlichen Mitarbeitern. Jedoch erfolgt die Überwachung des Risikos, der Vorschlag und die Aufbereitung von Risiko begrenzenden Maßnahmen zentral. Je nach Tragweite ist die Führungskraft beziehungsweise der Vorstand für Entscheidungen im Umgang mit den identifizierten und bewerteten Risiken verantwortlich und entscheidet über die Duldung, die Reduzierung, die Vermeidung oder den Transfer.

Das Management und Controlling der Operationellen Risiken stellt unter anderem die Bedeutung von betriebswirtschaftlichem Nutzen und aufsichtsrechtlichen Anforderungen auf eine Ebene. Die Einhaltung der vereinbarten Grundsätze und Aktivitäten aus der Strategie wird im Rahmen des Berichtswesens kontrolliert.

Die Erkenntnisse aus der bisherigen Auswertung der Methoden führen nicht zu einer hohen Risikogewichtung. Den vorhandenen Risiken wird durch zentrale Vorgaben, Arbeitsanweisungen, umfangreiche Kontrollsysteme und die ständige Weiterentwicklung der Methoden und Verbesserung der technischen Abläufe entgegengewirkt. Für einzelne Risiken wurden Notfallkonzepte (z.B. im IT-Bereich) erarbeitet. Das Restrisiko ist in großem Umfang durch Versicherungen in banküblichem Umfang gedeckt. Rechtliche Risiken werden durch sorgfältige Prüfung der vertraglichen Grundlagen, Einsatz rechtlich geprüfter Standardverträge, Einsatz von Sicherheits-, Compliance,- Datenschutz- und Geldwäschebeauftragter reduziert. Der OpVaR betrug zum Bilanzstichtag (31.12.2016) 4,3 Mio. EUR und ist im Rahmen der Risikotragfähigkeitsbetrachtung durch ein entsprechendes Risikodeckungspotenzial abgedeckt. Das Operationelle Risiko ist insgesamt vertretbar und stellt grundsätzlich keine bedeutende Risikogröße dar.

### 3.2.5 Sonstige Risiken

Alle Risiken, die sich den Adressenrisiken, Liquiditätsrisiken, Marktpreisrisiken sowie den operationellen Risiken nicht bzw. nicht eindeutig zuordnen lassen, stellen so genannte sonstige Risiken dar. Sie finden ihre Ausprägung als strategische Risiken (Planungsrisiko, Geschäftsfeldrisiko, Managementrisiko, Vertriebsrisiko) sowie als Reputationsrisiko.

Zur Einschätzung der sonstigen Risiken wurden Risikoszenarien formuliert, von einer Quantifizierung wird aber derzeit abgesehen. Im Rahmen einer jährlich durchgeführten Risikoinventur wird die Notwendigkeit der Aktualisierung dieser Risikoszenarien und der Quantifizierung dieser Risiken überprüft. Sonstige Risiken haben im Risikoportfolio der Sparkasse eine untergeordnete Bedeutung. Aus ihnen resultiert keine nennenswerte Gefährdung der Risikotragfähigkeit oder des Geschäftsbetriebes der Sparkasse.

### 3.3 Zusammenfassende Beurteilung der Risikolage der Sparkasse

Zum Zeitpunkt der Berichtserstellung bestehen keine den Bestand gefährdende Risiken, die Entwicklung beeinträchtigende Risiken oder über das übliche geschäftliche Maß hinausgehende Risiken mit wesentlichem Einfluss auf die Vermögens-, Finanz- und Ertragslage. Die stillen Reserven ermöglichen es uns, ggf. auch negative Entwicklungen mit extremer Ausprägung zu verkraften.

Die Sparkasse nimmt in ihrer geschäftspolitischen Ausrichtung eine risikoneutrale Position ein. Bei dieser müssen dem eingegangenen Risiko entsprechende Risikodeckungsmassen gegenüberstehen.

Zusammenfassend kann festgestellt werden, dass das vorhandene Eigenkapital und stille Reserven eine Risikotragfähigkeit bilden, bei der die vorhandenen Risiken die Existenz und den geschäftspolitischen Handlungsspielraum des Unternehmens, auch unter Annahme von Stressszenarien, nicht gefährden. Mit dem bestehenden Limit- und Berichtssystem existiert ein funktionierendes Beobachtungs- und Frühwarnsystem. Es bestand zu keiner Zeit Handlungsbedarf, um eine erhöhte Risikolage auf Gesamtbankebene abzuwenden. Gemessen an den für die jeweiligen Risikobereiche zugewiesenen bzw. zur Risikoabschirmung benötigten Deckungsmassen beurteilt die Sparkasse die Risikolage unter Berücksichtigung der aktuellen Ertragsentwicklung als nicht überhöht. Die Risikotragfähigkeit war und ist derzeit gegeben.

Die Sparkasse verfügt über ein dem Umfang der Geschäftstätigkeit angemessenes System zur Steuerung, Überwachung und Kontrolle der vorhandenen Risiken gemäß § 25a KWG. Insgesamt entsprechen die Risikomanagementsysteme der Sparkasse ihrem Risikoprofil und ihrer Strategie.
Die Sparkasse hat gem. den Mindestanforderungen an das Risikomanagement in 2016 einen strategischen Kapitalplanungsprozess umgesetzt, der zum einen die zukünftige Entwicklung der Kapitalquoten gem. Basel III/ Eigenkapitalverordnung (CRR) sowie zum anderen die zukünftige Entwicklung der Risikotragfähigkeit umfasst. Auf dessen Basis ist sowohl die Erfüllung der Eigenmittelanforderungen gem. Basel III als auch die Risikotragfähigkeit in den Berichtszeiträumen 2017 und 2018 gewährleistet. Über das übliche geschäftliche Maß hinausgehende Risiken, die wesentlichen Einfluss auf die Vermögens-, Finanz- und Ertragslage der Sparkasse haben, sind nicht erkennbar. Die Risikolage ist, auch in Hinblick auf die Anforderungen durch Basel III, insgesamt als nicht überhöht einzustufen.

Vor dem Hintergrund steigender Eigenmittelanforderungen (Kern- und Ergänzungskapital 8 %, Zuschlag für das Zinsänderungsrisiko im Rahmen der Allgemeinverfügung 1,40 % bzw. künftig SREP-Zuschlag, Kapitalerhaltungspuffer ansteigend von 0,625 % in 2016 bis 2,50 % ab 2019) sowie der

anhaltenden Niedrigzinsphase hat die Sparkasse Maßnahmen zur Ergebnisverbesserung eingeleitet. Unter Berücksichtigung dieser Maßnahmen halten wir die Eigenkapitalausstattung hinsichtlich der Unterlegung der aktuellen und zukünftigen Aktivitäten der Sparkasse für ausreichend.

## 4. Prognose-/Chancenbericht

Die konjunkturellen Perspektiven in Deutschland für 2017 werden von anerkannten Chefvolkswirten von Landesbanken, der DekaBank und aus großen Sparkassen erneut als „gut" beurteilt. Jedoch dürfte in 2017 das Wachstum mit einer geringeren Dynamik erfolgen als noch im Vorjahr. Die Experten erwarten für 2017 einen Anstieg des realen Bruttoinlandsproduktes (BIP) Deutschland um 1,3 %. Getragen werden soll das Wachstum 2017 erneut ausschließlich von der Binnenkonjunktur. Dabei wird der staatliche Konsum – trotz geringerer Ausgaben in Verbindung mit der Flüchtlingszuwanderung – nochmal überproportional zum BIP wachsen. Für den privaten Verbrauch wird ein leichter Anstieg prognostiziert, da weiterhin mit einer niedrigen Arbeitslosenquote (6,0 %) sowie normal ansteigenden Verbraucherpreisen (+1,7 %) gerechnet wird. Ebenfalls weiterhin zulegen dürften die Bauinvestitionen im Bereich des Wohnungsbaus.

Die Europäische Zentralbank (EZB) scheint ihre expansive Geldpolitik bis mindestens Ende 2017 fortzusetzen. Bis dahin ist eine Anhebung der Leitzinsen praktisch ausgeschlossen. Wenn diese Erwartung so eintritt, sind negative Zinsen für Einlagen der Privaten Haushalte in der Breite nicht zu erwarten. Für das Geschäftsjahr 2017 erwartet die Sparkasse Regensburg eine Seitwärtsentwicklung der Geld- und Kapitalmarktzinsen (3 Monats-Euribor: -0,40 %, 10 Jahre Swap: 0,65 %) sowie moderat steigende Aktienmärkte mit einer DAX-Prognose bei 11.800 Punkten bis Ende des Jahres.

Für den Raum Regensburg rechnet man im Vergleich zur gesamten Bundesrepublik – wie in den Vorjahren – auch in 2017 mit einem überdurchschnittlichen Wirtschaftswachstum. Viele Unternehmen erwarten eine Fortsetzung des Aufwärtstrends.

Die nachfolgenden Einschätzungen haben Prognosecharakter. Die Prognosen, die sich auf die Entwicklung unserer Sparkasse für das nächste Jahr beziehen, stellen Einschätzungen dar, die wir auf Basis der zum Zeitpunkt der Erstellung des Lageberichts zur Verfügung stehenden Informationen getroffen haben. Wir weisen darauf hin, dass sich die Prognosen durch die Veränderungen der zugrunde liegenden Annahmen als unzutreffend erweisen können. Hier verfügt die Sparkasse im Rahmen ihrer Risikosteuerung über Instrumente und Prozesse, um die Abweichungen von Erwartungen zu erkennen, zu analysieren und gegebenenfalls steuernd einzugreifen.

### Geschäftsverlauf

Die Sparkasse Regensburg steht weiterhin unter hohem Wettbewerbsdruck durch Vor-Ort-Konkurrenz einerseits und dem Internet andererseits. Neben Digitalisierung und Regulierung stellt

insbesondere die seit sechs Jahren anhaltende Niedrigzins- bzw. Nullzinspolitik der EZB eine nie gekannte Herausforderung für die Kreditinstitute dar. Aufgrund zunehmender Digitalisierung ist auch ein geändertes Kundenverhalten beim Bezug von Finanzdienstleistungen zu erkennen. Sie erfordert eine hohe Investition in Technik und einen sukzessiven Ausbau neuer Vertriebswege. Auch die seit der Finanzkrise verschärfte Regulatorik belastet in erheblichem Maße die Kreditwirtschaft. Immer tiefer gehende Detaillierungen des Meldewesens und eine höhere Frequenz des Reportings verursachen zusätzliche Kosten. Die Folgen dieser Belastungen spiegeln sich in unserem Hause zum Teil wieder in Einsparungsmaßnahmen im Personalbereich sowie in der in 2017 anstehenden Umstrukturierung unseres Filialnetzes.

Bei der Bestandsplanung rechnen wir im Bereich der Kundeneinlagen - auf Jahresdurchschnittsbasis gesehen - mit einem leichten Abschmelzen der Bestände (Schwerpunkt: Kurzfristige Einlagen und Spareinlagen). Bei den Kundenkrediten erwarten wir nach den sehr guten Zahlen der beiden Vorjahre eine etwas geringere Wachstumsdynamik. Wir gehen von einem soliden Wachstum aus mit Schwerpunkt in den Bereichen privater Wohnungsbau und gewerbliche Darlehen. Aufgrund der genannten Einschätzungen prognostizieren wir einen moderaten Rückgang der Durchschnittsbilanzsumme.

Aufgrund der für 2017 unterstellten Bestandsentwicklungen im Kundengeschäft (weitere Reduzierung der Differenz zwischen Kundeneinlagen und Kundenkrediten) wird sich der Bestand an Eigenanlagen in 2017 weiter reduzieren. Fällige Wertpapiere werden nicht prolongiert.

Zur Entwicklung im Dienstleistungsgeschäft verweisen wir auf nachfolgend beschriebene Ertragslage.

Vermögenslage

Das Kredit- und das Einlagengeschäft mit Kunden werden auch im Folgejahr die bestimmenden Positionen in der Bilanz darstellen.

Bei der prognostizierten Entwicklung der Ertragslage ist auch aus dem Jahresergebnis 2017 eine angemessene Eigenkapitalzuführung gesichert.

Mit dem Überprüfungs- und Bewertungsprozess (SREP) der Aufsichtsbehörden sind weitere Kapitalanforderungen verbunden. Nach heutigem Kenntnisstand können die künftigen Kapitalanforderungen erfüllt werden. Die Sparkasse Regensburg kann das für die Geschäfts- und Risikostrategie notwendige Kernkapital aus dem erwarteten künftigen Gewinn weiterhin selbst erwirtschaften.

Die Sparkasse hat einen Prozess zur Planung des künftigen Kapitalbedarfs installiert. Danach können die bis 2020 ansteigenden regulatorischen Anforderungen auch über den Planungshorizont der Risikotragfähigkeitsberechnung hinaus – unter Berücksichtigung ggf. einzuleitender Maßnahmen - erfüllt werden. Neben der Planung betrachtet die Sparkasse auch ein adverses Szenario.

Finanzlage

Aufgrund unserer vorausschauenden Finanzplanung, der vorhandenen Liquiditätsreserven und dem Liquiditätsverbund der Sparkassenorganisation gehen wir davon aus, dass auch im Prognosezeitraum die Liquiditätsanforderungen erfüllt werden und die Zahlungsbereitschaft der Sparkasse Regensburg gewährleistet ist. Wir erwarten, dass die aufsichtsrechtlichen Vorgaben der Liquiditätsverordnung/ LCR jederzeit eingehalten werden können.

Ertragslage

Die Entwicklung des Ergebnisses vor Bewertung wird maßgeblich durch den Zinsüberschuss geprägt. Der wiederum hängt in erheblichem Maße von der Zinserwartung ab. Für das Geschäftsjahr 2017 wird eine Seitwärtsbewegung der Geld- und Kapitalmarktzinsen erwartet.

Nach den Ergebnissen unseres Finanzplanungs- und Prognosesystems wird die Zinsspanne in 2017 merklich zurückgehen. Begründet wird diese Entwicklung dadurch, dass - aufgrund des unverändert niedrigen Zinsniveaus – fällige Kundenkredite und eigene Wertpapiere nur noch zu niedrigeren Zinssätzen prolongiert werden können. Dieser negative Wiederanlage-Effekt wird verstärkt durch das Zinsergebnis unserer bestehenden Absicherungsmaßnahmen in Form von Payer-Swaps. Zurückgehende Zinsen auf der Einlagenseite können die Abschmelzung der Zinsspanne nur zum Teil kompensieren.

Beim Provisionsüberschuss erwarten wir „unterm Strich“ einen deutlichen Anstieg. In den Bereichen Wertpapiergeschäft, Versicherungen, Bausparen und Immobilien sehen wir weiterhin Entwicklungspotenzial nach oben. Ebenso planen wir höhere Erträge bei den Geschäftsgirokonten, unter anderem durch Anpassung der Preismodelle. Dagegen gehen wir im Bereich Internationales Geschäft von einer rückläufigen Entwicklung aus.

Der Verwaltungsaufwand, der auf einer entsprechenden Investitions- und Personalplanung basiert, wird in 2017 moderat steigen. So werden im Bereich Sachaufwand erhöhte Aufwendungen für die geplante Umstrukturierung unseres Filialnetzes entstehen (Rückbaukosten, Umzüge, Ausbau SB-Filialnetz). Beim Personalaufwand kalkulieren wir nur mit einer leichten Erhöhung. Die Tariferhöhung TVöD zum 01.03.2017 in Höhe von 2,35 % soll im Gegenzug durch personelle Einsparungsmaßnahmen nahezu kompensiert werden.
Die Pflichtbeiträge zum Sparkassenstützungsfonds sowie die EU-Bankenabgabe belasten die Ertragslage der Sparkasse Regensburg, werden jedoch für 2017 in etwa auf Vorjahresniveau bleiben.

In Folge des schwierigen Marktumfeldes erwarten wir für das Jahr 2017 ein deutlich geringeres Betriebsergebnis vor Bewertung als im Vorjahr.
Für das Jahr 2017 erwarten wir in Summe auch ein deutlich geringeres Bewertungsergebnis. Dabei haben wir für die Belastungen aus dem Kredit- und Wertpapiergeschäft ein deutlich höheres Niveau eingepreist. In den Bereichen Sonstige Bewertung und Zuführung Vorsorgereserven planen wir eine klare Entlastung.

Auch im Bereich Neutrales Ergebnis gehen wir von einer deutlichen Ergebnisverbesserung im Vergleich zum Vorjahr aus.

Das Jahresergebnis vor Zuführung von Vorsorgereserven wird prognosegemäß deutlich unter dem Vorjahresergebnis liegen.

Gesamtaussage zur Prognose 2017

Die Perspektiven für das Geschäftsjahr 2017 beurteilen wir aufgrund des weiterhin schwierigeren Umfeldes als Herausforderung für die Sparkasse Regensburg. Wir rechnen mit gleichbleibenden Zinsen am Geld- und Kapitalmarkt. Dadurch können fällige Darlehen und eigene Wertpapiere nur zu deutlich niedrigeren Zinssätzen verlängert bzw. neu abgeschlossen werden. Das angestrebte Bestandswachstum, insbesondere im Kundenkreditgeschäft, kann die rückläufige Zinsspanne nur zum Teil kompensieren.

Als Chancen im Sinne dieses Berichts werden künftige Entwicklungen oder Ereignisse gesehen, die zu einer für die Sparkasse positiven Prognose- bzw. Zielabweichung führen können.

Für 2017 sehen wir Chancen für künftige Entwicklungen, die zu einer positiven Abweichung von den genannten Prognosewerten führen können. Die wesentliche Erwartung stützt sich auf die Stadt Regensburg als weiter stark wachsenden Markt, verbunden mit den Kriterien Bevölkerungsanstieg, anhaltendem Immobilienboom und zunehmender Wirtschaftskraft. An dieser positiven Ausgangslage wollen wir 2017 weiterhin partizipieren. Das aus der letzten Marktforschungsstudie erzielte Ergebnis, das uns als Marktführer bei den Privatkunden ausweist, stellt für uns eine große Motivation dar, die Service- und Beratungsqualität noch weiter im Sinne unserer Kunden zu verbessern. Ziel ist es, die Zufriedenheit unserer Kunden zu steigern, um auf diesem Wege weiteres Kundenwachstum und mehr Erträge zu generieren. Gerade der sich vollziehende demografische Wandel bietet hier viele Anknüpfungspunkte, wie zum Beispiel Altersvorsorge, Unternehmensnachfolge und steigender Beratungsbedarf.

Der vor einigen Jahren erfolgte Umbau der Sparkassenstruktur im Vertrieb, kombiniert mit einer Neupositionierung im Firmen- und Gewerbekundensegment zeigt hinsichtlich der Ertragsumsetzung anhaltend gute Erfolge. Die Sparkasse Regensburg beginnt, insbesondere im Privatkundengeschäft, mit einer strategischen Neuausrichtung. Im Rahmen der Vertriebsstrategie 2020 steht die Zielsetzung im Mittelpunkt, die Service- und Beratungsqualität und damit einhergehend, die Kundenzufriedenheit weiter zu erhöhen. Um diese Ziele zu erreichen, erfolgt der Ausbau von Kompetenz- und Beratungszentren sowie von medialen Vertriebswegen.

Regensburg, den 21.03.2017

**Sparkasse Regensburg**

**Vorstand**

| | | |
|---|---|---|
| Franz-Xaver Lindl, VV | Dr. Markus Witt, stv. VV | Manfred Pitzl, VM |

Regensburg, den 27.03.2017

**Sparkasse Regensburg**

**Vorsitzende des Verwaltungsrats**

Tanja Schweiger, Landrätin

# BERICHT DES VERWALTUNGSRATES

Der Verwaltungsrat der Sparkasse Regensburg trat im Berichtsjahr zu 5 Sitzungen zusammen. Er informierte sich dabei eingehend über die in seine Zuständigkeit fallenden Angelegenheiten, über die aktuelle Geschäftsentwicklung und über die wirtschaftlichen Verhältnisse der Sparkasse. Er nahm die ihm nach Gesetz und Satzung obliegenden Aufgaben wahr und überwachte die Tätigkeit des Vorstands.

Der am 21.03.2017 vom Vorstand aufgestellte Jahresabschluss 2016 wurde zusammen mit dem Lagebericht dem Verwaltungsrat in der Sitzung am 27.03.2017 vorgelegt.

In der Sitzung am 20.06.2017 stellte der Verwaltungsrat den mit dem uneingeschränkten Bestätigungsvermerk der Prüfungsstelle des Sparkassenverbandes Bayern versehenen Jahresabschluss 2016 fest.

Zudem wurde beschlossen, den Bilanzgewinn in Höhe von 10.681.018,69 EUR in voller Höhe zur Aufstockung der Sicherheitsrücklage zu verwenden.

Regensburg, den 20.06.2017

**Sparkasse Regensburg**

**stv. Vorsitzende des Verwaltungsrates**

Tanja Schweiger, Landrätin